पूर्ण संख्या—७१

जोधपुर-दर्शन

अक्टूबर | वर्ष ७

आश्विन २००२ | संख्या ४

सम्पादक

नारायण मिश्र, बी० ए०

इलाहाबाद

वार्षिक मूल्य

विदेश में

इस प्रति का ।=)

र कार्यालय — प्रयाग

स्थित सीमा, तथा विस्तार

जोधपुर राजपूताना भर में सबसे बड़ा राज्य है। इसका क्षेत्रफल ३४९६३ वर्ग मील है जो समस्त राजपूताना का प्राय: एक चौथाई है। यह राज्य २४'३७ और २७·४२ उत्तरी अक्षांशों ७० और ७५.२२ पूर्वी देशान्तरों के बीच में स्थित है। उत्तर-पूर्व से दक्षिण-पश्चिम तक इसकी अधिक से अधिक लम्बाई ३२० मील है। इसकी अधिक से अधिक चौड़ाई १७० मील है।

जोधपुर राज्य के उत्तर में बीकानेर, उत्तर-पश्चिम में जैसलमेर, पश्चिम में सिन्ध प्रान्त का थरपार्कर जिला दक्षिण-पश्चिम में कच्छ कास, दक्षिण में पालनपुर और सिरोही राज्य, दक्षिण पूर्व में उ. पुर राज्य, पूर्व में अजमेर मेरवाड़ा जिला, किशनपुर राज्य और उत्तर-पूर्व में जैपुर राज्य है।

इस राज्य की राजधानी जोधपुर नगर को रायजोधा ने १४५९ ई० में बसाया था। इसी से इस राज्य को भी प्राय: इसी (जोधपुर) नाम से पुकारते हैं। इसका दूसरा नाम मारवाड़ है जो मरुवार या मरुस्थल शब्द का अपभ्रंश है। इसे मरूस्थल भी कहते थे। मारवाड़ देश (जैसा इस नाम से स्पष्ट है) अधिकतर वीरान, उजाड़ रेतीला प्रदेश है। उत्तर पश्चिम की ओर एक दम उजाड़ है। पर उत्तर-पूर्व और पूर्व की ओर अर्वली पर्वत के समीप यह कुछ उपजाऊ हो गया है। जोधपुर और सिन्ध की सीमा के पास थार का महान मरुस्थल है। यह कच्छ केरन से लूनी नदी के आगे उत्तर की ओर चला गया है।

इस मरुस्थल और छोटे मरुस्थल के बीच में भूमि कुछ कम उजाड़ है। यहां चूने के पत्थर की कुछ पहाड़ियां हैं। जो बालू को आगे नहीं ढकने देती हैं। फिर भी यह प्रदेश उजाड़ खंड दिखाई देता है। इसके बीच बीच में लम्बी सीधी समानान्तर पहाड़ियां चली गई हैं। इनसे यह प्रदेश ऊँचा नीचा और लहरदार दिखाई देता है मानो समुद्र की सूखी तली फैली हुई है। कोई कोई पहाड़ियां दो मील लम्बी और पचीस फुट से चार सौ फुट तक ऊँची हैं। इनके ढालों को पानी ने काट दिया है। पश्चिम की ओर से चलने वाली हवाओं ने इसकी चोटी पर कड़े कणों को रगड़ कर चोटी को भी लहरदार बना दिया है। खुश्क ऋतु में इन पर कहीं कहीं सूखी मुरझाई हुई झाड़ियां और मोटी घास रहती है। सूक्ष्म वर्षा होने पर इन पर कुछ हरियाली छा जाती है। पश्चिम की ओर उजाड़ खंड और अधिक बढ़ जाता है। यहीं उत्तरी और उत्तरी पश्चिमी भाग में थाल या थार रेगिस्तान है। यहां की घास भाले के समान चुभने वाली होती है। यहां दो तीन सौ फुट (कहीं कहीं ४५० फुट) गहरा खोदने पर कुओं में पानी मिलता है। वह भी प्रायः खारा होता है। खेती बहुत ही कम होती है। गांव बहुत कम हैं और एक दूसरे से बड़ी दूर पर मिलते हैं।

पर्वत—जोधपुर राज्य में अलग अलग बहुत सी पहाड़ियां फैली हुई हैं। इनकी ऊँचाई अधिक नहीं है। अधिकतर पहाड़ियां समुद्र-तल से १००० और २००० फुट के बीच में ऊँची हैं। अर्वली पर्वत की अनेक श्रेढ़ियां और शाखायें दक्षिण की ओर हैं। सूंड या जसवंतपुर की पहाड़ियां २००० फुट से अधिक

ऊँची हैं। सिवान के पास छप्पन का पहाड़ समुद्र-तल से ३१९९ फुट ऊँचा है। जालोर की राजा पहाड़ियां २४०८ फुट ऊँची हैं। अर्वली पर्वत उत्तर पूर्व में सांभर झील से लेकर दक्षिण-पूर्व में सिरोही और उदयपुर तक जोधपुर राज्य की समस्त पूर्वी सीमा बनाता है। इस राज्य में अर्वली की सबसे ऊँची चोटी ३६०७ फुट है। यह नान स्टेशन (बाम्बे बड़ौदा सेन्ट्रल इण्डिया रेलवे) से १३ मील पूर्व की ओर स्थित है। इस पर्वत का जोधपुर की ओर वाला ढाल अधिक सपाट है। इधर वर्षा भी अधिक होती है। अतः इधर यह पहाड़ वन से ढका है। इस ओर अर्वली के प्रधान दर्रे बर, देवेर और पघनाल हैं। आगरे से अहमदाबाद को जाने वाली पक्की सड़क बर दर्रे में होकर जाती है। यह पर्वत बंगाल की खाड़ी और अरब सागर के बीच में जल विभाजक बनाता है। अर्वली के पूर्वी ढाल का वर्षा जल सहायक नदियों द्वारा गङ्गा में पहुँचकर बंगाल की खाड़ी में पहुँचता है। पश्चिमी ढाल का वर्षा जल लूनी नदी में जाकर कच्छ केरन (अरब सागर) में पहुँचता है।

लूनी या लोनवारि अथवा लवण वारि नदी अजमेर शहर के दक्षिण पश्चिम (२६.२५ उत्तरी अक्षांश और ७४.३४ पूर्वी देशान्तर) में निकलती है। यहां इसे सागरमती नाम से पुकारते हैं। अजमेर जिले के गोबिन्दगढ़ गांव के आगे पुष्कर कुन्ड से निकलने वाली सरस्वती नदी लूनी में आ मिलती है। सरस्वती के संगम के आगे लूनी जोधपुर राज्य में प्रवेश करती है। २०० मील दक्षिण-पश्चिम की ओर बहने के बाद लूनी नदी कच्छ केरन के दलदलों में समाप्त हो जाती है। अजमेर और आबू

के बीच में अर्वली से निकलने वाली लिलरी, रायपुर लूनी सुकिल, गुहिया, बांदी सुकरी और जवई नदियां लूनी के बायें किनारे पर आकर मिल जाती हैं। केवल जोजरी नदी दाहिने किनारे पर मिलती है। यह सब बरसाती नदियां हैं। इनमें किसी में साल भर पानी नहीं रहता है। पर इनसे जोधपुर राज्य के दक्षिणी भाग में खेती को बड़ी सहायता मिलती है। स्वयं लूनी नदी भी बरसाती नदी है। वर्षा ऋतु में इसमें पानी बहता है। गरमी की ऋतु में यह प्रायः सूख जाती है। इसकी सूखी तली में तरबूज़ उगाये जाते हैं। जिन गहरे भागों में पानी बना रहता है वहां सिंघाड़ा उगाये जाते हैं। लूनी के किनारे कहीं पांच फुट और कहीं २५ फुट तक ऊँचे हैं। किनारों पर झाऊ और दूसरी झाड़ियां उगती हैं। बाढ़ के समय किनारों के ऊपर पानी फैल जाता है। जहां बाढ़ का पानी पहुँच जाता है वहां गेहूँ और जौ की फसल अच्छी होती है। पर लूनी प्रायः अपना मार्ग बदल देती है। कहीं कहीं एक किनारे पर अच्छी खेती हो जाती है। पर दूसरा किनारा उजाड़ पड़ा रहता है। उदगम से बलोतरा तक लूनी नदी का पानी मीठा रहता है। बालोतरा के आगे मुहाने (कच्छ केरन) तक इसका पानी खारा रहता है। इसकी तीन शाखाओं में एकदम खारा पानी रहता है। नवम्बर से जून तक नदी के किनारों पर कुआं खोदने से कुछ गहराई पर पीने योग्य मीठा पानी मिल जाता है। इन कुओं से खेत भी सींचे जाते हैं। इधर जो कुछ अन्न होता है यह लूनी नदी का ही बरदान है। यदि यह जल सिंचाई के लिये न मिले तो यहां कोई फसल पैदा न हो सके। बिलार नगर के पास लूनी नदी

में एक बांध बना कर एक बड़ी झील बना ली गइ, इसे जसवन्त सागर कहते हैं। इसमें १३०० वर्ग मील का वर्षा जल आ सकता है। इस झील का क्षेत्रफल ११ वर्गमील है। इसकी अधिक से अधिक गहराई ४० फुट है। यहां से निकलने वाली सिंचाई की नहरों और शाखाओं की लम्बाई ४० मील है। लिलरी नदी लूनी की प्रथम बड़ी सहायक है। यह (लिलरी) ब्यावर नगर के पश्चिम में अर्वली पर्वत से निकलती है। यह उत्तर और उत्तर पश्चिम की ओर बहती है। रास नगर के पास स्थित पहाड़ियां इसे दक्षिण-पश्चिम की ओर मोड़ देती हैं। सुकरी नदी इसके बायें किनारे पर मिलती है। संगम के आगे यह फिर उत्तर-पश्चिम की ओर मुड़ती है। इसी ओर इसके किनारे नीमाज नगर स्थित्त है। निम्बोल गांव के पास यह लूनी नदी में मिल जाती है।

रायपुर लूनी मेरवाड़ा की पहाड़ियों से निकल कर उत्तर पश्चिम की ओर बहती हुई रायपुर गांव के पास आती है। इसी से इसका नदी नाम पड़ा। यहीं इस नदी पर बाम्बे बड़ौदा सेन्ट्रल इण्डिया रेलवे का पुल बना है। इसके आगे बिलार नगर के पास बहती हुई उत्तर-पश्चिम की ओर बहती है और लूनी नदी में मिल जाती है। जोजरी नदी मेडता जिले से निकल कर दक्षिण-पश्चिम की ओर बहती है। पचास मील बहने के बाद यह नदी लूनी में मिल जाती है। पिपार इस नदी के किनारे पर बसा हुआ मुख्य नगर है। लूनी नदी के दाहिने किनारे पर मिलने वाली एक मात्र नदी जोजरी है।

गुहिया या गुहियाबाल नदी बिलार के दक्षिण में पहाड़ियों

सेनिकलती है। बीस मील दक्षिण-पश्चिम की ओर बहने के बाद इसमें सुकरी या सुकली नदी मिल जाती है। संगम के आगे धोलेरा के पास इसमें कच्चे बांध हैं। सरदार समन्द बांध बना हुआ है। इसके तीन ओर २७२५ फुट लम्बी नहर हैं। इससे यहां पर सिंचाई होती है। पश्चिम की ओर आगे बढ़ने पर इसके बायें किनारे पर पुम्फारियां और बांदी नदियां बांयें किनारे पर आ मिलती हैं। रेरिया नदी बायें किनारे पर मिलती है। डूनारा के पास यह लूनी नदी में मिल जाती है। रोहत स्टेशन के पास जोधपुर बीकानेर रेलवे एक पुल के ऊपर से इस नदी को पार करती है।

गुहिया की प्रधान सहायक बांदी नदी है। यह ५० मील लम्बी है और सोजात के दक्षिण से निकलती है। पाली नगर इसी के किनारे बसा है। पाली के पास ही सिंचाई का बांध बना है। बांदी नदी का पानी रंगाई के लिये बड़ा अनुकूल है।

सुकरी नदी देसूरी के दक्षिण में अर्वली पर्वतों से निकलती है। यह नदी दक्षिण-पश्चिम की ओर बहती है। देसूरी और चानोद इसके किनारे पर बसे हुये प्रसिद्ध नगर हैं। समदरी के पास यह लूनी में मिल जाती है। रानी गांव के पास बाम्बे बड़ौदा और सेन्ट्रल इण्डिया रेलवे एक पुल पर से इस नदी को पार करती है। बांकली गांव के पास इसमें बांध बना कर एडवर्ड समन्द नाम का ताल सिंचाई के लिये तयार किया गया है। इस ताल का क्षेत्रफल पूरा भरने पर ६ वर्गमील है। इसकी अधिक से अधिक गहराई २२ फुट है। इससे निकलने वाली नहर और शाखाओं की लम्बाई ५½ मील है। जवई नदी राज्य के दक्षिणी

पूर्वी कोने पर निकलती है। पहले यह उत्तर की ओर बहती है। इसके पास ही नान और बेर गांव बसे हैं। फिर यह जोधपुर और सिरोही राज्यों की सीमा के पास होकर बहती है। एरिनपुर छावनी इसी के किनारे स्थित है। अहोर के दाहिनी ओर और जालोर के बाईं ओर छोड़कर यह पश्चिम की ओर मुड़ती है। गढ़ के पास यह लूनी नदी में मिल जाती है। बाढ़ के समय इसकी चौड़ाई बहुत अधिक बढ़ती जाती है। एरिन पुर रोड स्टेशन के पास पहले इसे पार करना असम्भव हो जाता था।

झीलें—इस राज्य की बड़ी बड़ी झीलें प्रायः सभी खारी हैं।

सांभर झील २६.२५ और २७·१ उत्तर अक्षांशों ७४·५४ और ७५·१४ पूर्वी देशान्तरों के बीच में स्थित हैं। यह दिल्ली से २३० मील और अजमेर शहर से ५३ मील दूर है। यह झील समुद्र तल से १२०० फुट की ऊँचाई पर स्थित है। पूरी भरी होने पर झील की लम्बाई २० मील हो जाती है। इसकी चौड़ाई दो मील से ७ मील तक है। इसका क्षेत्रफल ९० वर्ग मील है। गरमी की ऋतु में इसकी तली प्रायः सूख जाती है। प्रबल वर्षा होने पर इसमें वर्ष भर पानी बना रहता है। सांभर नगर में वर्ष भर में औसत से २० इंच पानी बरसता है। नाव में १४ इंच से कम वर्षा होती है। सांभर झील में तीन नदियां पानी लाती हैं। इनमें दो नदियां पश्चिम की ओर अरवली की पहाड़ियों से निकलती हैं। तीसरी नदी उत्तर की ओर से आती है। सांभर के पड़ोस की भूमि बलुई और उजाड़ है। दक्षिण की ओर नीचे रेतीले टीले हैं। ग्रीष्म ऋतु में झील में केवल कहीं कहीं पानी के कुन्ड शेष रह जाते हैं। झील के अधिकांश तली में

सफेद नमक तेज धूप में बरफ के समान चमकता है। झील से नमक निकालने के तीन ढङ्ग हैं। कुछ भागों में स्थायी क्यार या क्यारी बना है। उथले भागों में क्षणिक क्यारी बना दी जाती है।

सूर्य की तेज धूप से पानी सूख जाता है और नमक शेष रह जाता है। कुछ घिरे हुये भागों में अपने आप नमक तयार होता रहता है। नमक निकालने के काम में तीन लाख से ऊपर स्त्री और पुरुष मजदूर लगे हुये हैं। बलई, बरार, गूजर, जाट, कसाई कुम्हार, माली, मुगल, पठान आदि समीप में बसे हुये कई जाति के लोग मजदूरी करते हैं। झील के समीप तीन, (सांभर गढ़ और कुचामन रोड या नाव) रेलवे स्टेशन हैं। लाइन नमक के ढेरों के समीप होकर गई है। यह नमक सीधे डब्बों में लाद दिया जाता है। यह नमक संयुक्तप्रान्त राजपूताना दक्षिणी पंजाब, नैपाल, मध्य भारत, मध्य प्रान्त और बरार में पहुँचता है। चार फुट से १२ फुट की गहराई तक झील की कीचड़ में भी ६ फीसदी नमक भरा पड़ा है। १८७० ई० में झील को अँग्रेजों ने पट्टे पर ले लिया तब से अब तक प्रायः ६० लाख टन नमक निकाला जाता है। इसके बदले में सवा चार लाख रुपया जोधपुर दरबार को और पौने तीन लाख रुपया जैपुर दरबार को मिलता है। इसके अतिरिक्त १४००० मन नमक जोधपुर राज्य को और ७००० मन नमक जैपुर राज्य को मुफ्त मिलता है।

झील की तली में सब कहीं कड़ी चट्टानें जिनसे समीपवर्ती अरवली पहाड़ियां बनी हैं। इस कड़ी तली के ऊपर गहरी

कीचड़ या कांप बिछी हुई है। पूर्वी सिरे पर सांभर नगर के समीप इस कीचड़ की गहराई ६१ फुट है। बीच में खजान के पास कांप या कीचड़ ७० फुट गहरी है। उत्तरी-पश्चिमी सिर पर कुचामन रोड या नाव के पास कीचड़ की गहराई ७६ फुट है।

डीडवाना झील इसी नाम के नगर के ठीक दक्षिण और दक्षिण-पश्चिम में स्थित है। १८७८ ई० में भारत सरकार ने दो लाख रुपये वार्षिक पट्टे पर झील से नमक निकालने का अधिकार ले लिया। जिस घाटी में डिडवाना झील स्थित है वह ३½ मील लम्बी और १½ मील चौड़ी है। कहते हैं पहले यहा एक नदी बहती थी। फिर नदी का ऊपरी मार्ग बालू से घिर गया और झील बन गई। झील के बीच वाले भाग से नमक निकाला जाता है। यह भाग सवा दो मील लम्बा है। इसकी तली में सांभर झील के समान चिकनी काली कीचड़ है। इसके नीचे नमक मिला हुआ पानी है। वर्षा ऋतु में कुछ पानी इकट्ठा हो जाता है। पर तेज़ धूप में यह शीघ्र ही सूख जाता है और नमक की पतली तह शेष रह जाती है। यह नमक अधिक नहीं होता। है। अधिकतर नमक भीतर के पानी में है। इसे निकालने के लिये झील की तली में कुएँ खोदे जाते हैं। इनमें दस बारह फुट पर पानी निकल आता है। यह पानी ढेकली से ऊपर निकाला जाता है। यह पानी क्यारियों में सूखने के लिये फैला दिया जाता है। पहले कुछ वर्षों तक पानी नीचे भिद जाता है और नमक की तह बहुत पतली पड़ती है। इसमें नीचे मिट्टी भी मिली रहती है। फिर यह तह इतनी मोटी और कड़ी हो जाती है कि इसे तोड़ने के लिये कुदाली की जरूरत पड़ती है जब इस

प्रकार की क्यारी बन जन जाती है तब बहुत ही साफ और बड़ा नमक तयार होता है। नमक की मात्रा भी बहुत बढ़ जाती है। यहां से प्रति वर्ष प्रायः तीन लाख मन नमक तयार होता है। ८० प्रतिशत नमक पंजाब को भेज दिया जाता है शेष राजपूताना में खर्च हो जाता है। यहां प्रत्येक क्यारी प्रायः ८० फुट लम्बी और ८० फुट चौड़ी है। प्रत्येक क्यारी में हर पन्द्रहवें दिन दस बारह मन नमक तयार हो सकता है। पर तीन चार महीने जोर से काम होता है। नीचे खारे पानी की मात्रा अपार है। इसके शीघ्र समाप्त होने का कोई डर नहीं है।

पचभद्रा झील इसी नाम के नगर से ५ मील और जोधपुर शहर से ८० मील दूर है। १८७८ ई० में झील से नमक निकालने का पट्टा १ लाख ७० हजार वार्षिक रुपये भारत सरकार ने करा लिया। इस झील का क्षेत्रफल १० वर्गमील है। यहां सदा खारा पानी बना रहता है। औसत से गढ़े २३० फुट लम्बे रहते हैं। ११ फुट की गहराई पर नीचे का खारा पानी निकल आता है। डले बनाने के लिये धूप में सूखाने के समय नमकीन पानी में मोराली की टहनियां डाल दी जाती हैं। मोराली की झाड़ियां पड़ोस में बहुतायत से उगती हैं। यहां का नमक राजपूताना में सर्वोत्तम गिना जाता है। यह बहुत सफेद और साफ होता है। यह नमक संयुक्त प्रान्त मध्य भारत, मध्य प्रान्त और राजपूताना को जाता है। पहले यह व्यापार बंजारों के हाथ में था अब यहां का नमक रेल द्वारा बाहर भेजा जाता है।

कुचावन झील इसी नाम के नगर के दक्षिण में स्थित है।

वास्तव में यहां दो खारी झीलें हैं। इनमें इतना कम और इतना रद्दी नमक है कि बहुत कम निकाला जाता है।

सांचोर हुकूमत में भटकी के पास वाली झील या दलदल का क्षेत्रफल वर्षा ऋतु में चालीस पचास वर्ग मील हो जाता है। सूखने पर इसमें गेहूँ और चना की खेती होती है।

पोकरन झील पोकरन नगर के पास है जो जोधपुर नगर से ८५ मील उत्तर-पश्चिम की ओर है। नमकीन दलदल ४ मील लम्बा और २ मील चौड़ा है। खारा पानी तली से ७ फुट की गहराई पर मिलता है। पहले यहां से नमक बनाया जाता था। आज कल यह स्थान रेल से दूर है। अतः यहां का नमक बाजार तक भेजने में इतना खर्च बढ़ जाता है कि लाभ नहीं होता है।

फलोदी झील फलोदी नगर से दस मील उत्तर को ओर स्थित है। यह झील ५ मील लम्बी और १३ मील चौड़ी है। १८७८ में भारत सरकार ने यहां से नमक निकालने के लिये पट्टा करवाया १८९२ ई० तक नमक निकलता रहा फिर रेल से दूरी होने के कारण अधिक लाभ दिखाई नहीं दिया अतः इनसे नमक का निकालना बन्द कर दिया गया।

भू-गर्भ—इस राज्य में अर्वली की चट्टानें अति प्राचीन हैं। इनके बीच बीच में दूसरे युगों की चट्टानें हैं। मक्राना और सारंगवा में शुद्ध सफेद संगमरमर पत्थर है। मल्लानी जिले में लावा की तहें हैं। दानेदार पत्थर सिवान और जालोर में मिलता है। कई भागों में आग्नेय चट्टानें हैं। जोधपुर शहर के समीप लावा की तहों के ऊपर बलुआ पत्थर है। जो अधिकतर घर

बनाने के काम आता है। कंकड़ पत्थर के समूह हैं। यहां अनेक स्थानों में बालू के टीले हैं। बालू के कण प्रायः समुद्र की ओर से आये हैं और नमकीन हैं। जहां यह बालू सांभर और पचभद्रा जैसे आखातों में इकट्ठी हो गई हैं वहां इससे वर्षा होने पर नमक निकाला जाता है।

जलवायु—जोधपुर राज्य की जलवायु खुश्क और विषम है। शीतकाल और ग्रीष्म काल के तापक्रम में बहुत अन्तर रहता है। दिन और रात का तापक्रम भेद भी कभी कभी ३० अंश फारेन हाइट तक हो जाता है। अप्रैल, मई और जून महीनों में विकराल गरमी पड़ती है। इन्हीं महीनों में झुलसाने वाली लू और बालू से भरी हुई आंधियां चलती हैं। फिर भी ग्रीष्म ऋतु शुष्क होने से बड़ी स्वास्थ्य कर होती है। जुलाई समाप्त होने पर अगस्त और सितम्बर मास में यहां की जलवायु मनोहर हो जाती है। अक्तूबर में फिर कुछ दूसरी बार गरमी हो जाती यहां अधिक से अधिक तापक्रम मई मास में १०७ अंश और जनवरी में कम से कम ताप क्रम ४९ अंश होता है। एक बार १८९७ ई० में यहां का तापक्रम १२० अंश हो गया। १९०५ जनवरी का तापक्रम २७ अंश रह गया।

जोधपुर राज्य मानसूनी हवाओं के मार्ग से बाहर स्थित है। इसलिये यहां वर्षा बहुत ही कम और अनिश्चित होती है। एक जिले और दूसरे जिले की वर्षा में भी बड़ा अन्तर रहता है। यहां के लोगों का कहना है कि कभी कभी गाय का एक सींग वर्षा से भीग जाता है और दूसरा सूखा रहता है पहले राज्य के दक्षिणी और दक्षिणी-पूर्वी भाग में वर्षा होती है। यह वर्षा

जंगल के कारण होती है। पर जब पानी लाने वाली हवायें उत्तर की ओर पहुँचती हैं तब रेगिस्तानी गरमी में उनकी नमी सूख जाती है। यहां शीत काल में प्रायः सूखा रहता है जो कुछ सूक्ष्म वर्षा होती है वह गरमी की ऋतु में होती है। यदि गरमी की ऋतु में भी पानी न बरसा तो फिर दूसरे वर्ष ही पानी बरसने की आशा होती है।

जोधपुर शहर में वर्ष भर में १२¾ इंच पानी बरसता है। इसमें प्रायः सवा इञ्च जून के अंत में ३¾ इंच जुलाई में साढ़े चार इंच अगस्त में और प्रायः २ इञ्च सितम्बर में पानी बरसता है। एक बार १८८१ ई० में अगस्त महीने में एक दिन में १० इंच पानी बरसा। पर किसी किसी वर्ष एक इञ्च से भी कम पानी बरसता है। दक्षिणी भाग में एक वर्ष ५५ इञ्च से अधिक वर्षा हुई।

बनस्पति—राज्य के पूर्वी और दक्षिणी जिलों में अर्वली के समीप अधिक हरियाली है। यहां अर्वली के ढालों और उधर से निकलने वाले नालों में काफी अच्छी लकड़ी मिल जाती है। दूसरे भागों में नींम, बबूल आदि को छोड़कर बहुत कम काम के पेड़ होते हैं। बबूल की पत्तियां ऊँट और बकरियां बड़े चाव से खाती हैं। इसकी छाल कपड़ा कमाने के काम आती है। इसका गोंद भी बड़ा उपयोगी होता है। सिरिस, पीपल और इमली के भी पेड़ पाये जाते हैं। जोधपुर के अनार बहुत प्रसिद्ध हैं। रेगिस्तानी प्रदेश का प्रधान पेड़ बेर है। यह वर्षा न होने पर भी हरा रहता है। इस ओर खेजरा भी बड़ा उपयोगी होता है। इसकी पत्तियां ऊँट और बकरे खाते हैं। इसकी लकड़ी से

धन्नी, गाड़ी हल आदि बनते हैं। अकाल पड़ने पर इसकी छाल को कूट कर लोग आटे में मिला कर खाते हैं। मरुस्थल में फूलने वाला पलास या ढाक है। इसकी पत्तियां गरमी में भी हरी रहती हैं। यह कई महीने तक फूला रहता है। इसके रेशे तकिया में भरे जाते हैं। इससे छत पाटने, पशुओं का बाड़ा बनाने और जलाने के काम आती है। यहां घास कई प्रकार की पाई जाती है। डाभ या कुश, कांस और खस बहुत है।

पशु—इस राज्य में जंगली पशु कई प्रकार के पाये जाते हैं। पहले यहां सिंह भी थे अन्तिम सिंह जसवन्त पुर के पास १८७२ ई० में मारा गया। जङ्गली गधे भी बहुत कम मिलते हैं। यहां चीते, भालू और सांभर अर्वली के ढालों जसवन्तपुर की पहाड़ियों और जालोर में मिलते हैं। जंगली सुअर बहुत हैं। पश्चिम की ओर भेड़िया बहुत हैं वे झुंड बनाकर शिकार करते हैं। गांव के लोग उनसे बहुत डरते हैं। जंगलों में जंगली कुत्ते भी मिलते हैं। तेंदुआ और लकड़ बघा पहाड़ियों के समीप और नालों में रहते हैं। नील गाय उत्तर और पूर्व के कई जिलों में पाई जाती हैं। हिरण मैदान में पाये जाते हैं। यहां चिड़ियां कई प्रकार की पाई जाती हैं।

कृषि—जोधपुर का अधिकांश प्रदेश एक विशाल रेगिस्तान है। पश्चिम, उत्तर-पश्चिम और दक्षिण-पश्चिम से पूर्व की ओर बढ़ने पर कुछ उपजाऊ भूमि मिलती है। वर्षा की प्रायः सब कहीं कमी है। कुओं में अधिक गहराई पर पानी मिलता है। देश के अधिकतर भागों में न नदियां हैं, न बन है। कुछ

में सिंचाई का कोई प्रबन्ध ही नहीं है। कुछ भागों में नमकीन मिट्टी है। वहां वर्षा होने पर केवल घास उग सकती है। बाली देसूरी, जैतारन, मारोन और सोजात राज्य के उपजाऊ जिले हैं। यहां कुओं की अधिकता है। इससे यहां रबी और खरीफ दोनों फसलें उग सकती हैं। सांकर, शिउ, शेरगढ़ और मल्लानी के कुछ भागों में कुओं की इतनी कमी है कि कठिनाई से एक फसल हो सकती है।

इस राज्य में मिट्टी कई प्रकार की पाई जाती है। मटियाली चिकनी होती है। यह काली, राती (लाल) या पीली होती है। राज्य के १८ प्रतिशत खेतों की भूमि मटियाली है। यह मिट्टी बड़ी उपजाऊ होती है। इसे खाद की आवश्यकता नहीं होती है यह बड़ी कड़ी होती है। अतः पानी बरसने पर ही इसमें जुताई होती है। इसमें गेहूँ, चना, कपास, ज्वार और तिल्ली की फसलें बड़ी अच्छी होती हैं। भूरी मिट्टी का रंग भूरा होता है। इसमें चिकनी मिट्टी का कुछ ही अंश होता है। यही राज्य की प्रधान मिट्टी है। ५८ प्रतिशत खेतों की भूमि भूरी है। इसे साधारण वर्षा की आवश्यकता होती है। इसे जोतना सुगम है। इसे खाद की आवश्यकता पड़ती है इसमें बाजरा और मोठ की फसलें होती हैं। तीन चार वर्ष लगातार खेती के बाद यह तीन चार वर्ष के लिये परती छोड़ दी जाती है। अधिक वर्षा होने पर मटियाली और भूरी मिट्टी में बिना सिंचाई के गेहूँ और चना की फसलें उगती हैं। रेतली या रेतीली मिट्टी के कण बारीक होते हैं। इसमें चिकनी मिट्टी का अंश नहीं होता है। राज्य के ३१९ प्रतिशत खेतों की मिट्टी रेतीली है। इससे कम समय पर

वर्षा की रेतीली भूमि निचले भागों में होती है तब यहां पड़ोस के ऊँचे भागों का पानी बह आता है। इससे इसमें नमी रहती है। इसमें ज्वार, बाजरा की फसल अच्छी हो जाती है। निचले भाग की रेतीली मिट्टी देहरी कहलाती है। ऊँचे भाग की रेतीली मिट्टी धोरा कहलाती है। मगरा या ठर्रा मिट्टी में छोटे छोटे कंकड़ पत्थर बहुत होते हैं। यह मिट्टी पहाड़ियों के निचले ढाल पर होती है। राज्य के ४ फीसदी खेतों में ठर्रा मिट्टी है।

जब नई भूमि में खेती आरम्भ होती है तब पहिले झाड़ियों को काट कर वहीं जला देते हैं। राख खाद का काम देती है। कभी कभी झाड़ियों को काटकर उनसे खेत का घेर बनाते हैं। कड़ी मिट्टी के खेत कई बार जोते जाते हैं। हल चलाने के लिये एक ऊँट या दो बैल या भैंसे जोते जाते हैं।

खरीफ की फसल पानी बरसते ही बर्षा ऋतु के आरम्भ में बो दी जाती है। रबी की फसल बोने के लिये अधिक परिश्रम किया जाता है। खेत छः सात बार जोते जाते हैं। गाय, बैल, और जंगली सुअर, हिरण आदि से फसल को बचाने के लिये खेत के चारों ओर कंटीली झाड़ियों का घेर कर दिया जाता है। चिड़ियों को डराने के लिये खेत के बीच में एक डरावना आकार खड़ा कर दिया जाता है। डैगिया या बरिया लोग खेत की लावनी या कटाई का काम करते हैं। कटी हुई फसल को गाड़ियों या ऊँट पर लाद कर गाहने के स्थान (लाटा) पर भेजते हैं। यहां गैता या गाहने माड़ने का काम होता है। अन्न को भूसा से अलग करने के लिये हवा की आवश्यकता होती है। हवा चलने

पर भूसा मिले हुये अन्न को टोकरी में भर कर सिर की ऊँचाई से छोड़ते हैं। हलका भूसा हवा से कुछ दूर उड़ कर गिरता है। राज्य के १२ लाख (लगभग ६२ प्रतिशत) मनुष्य खेती के काम में लगे हुये हैं। जाट, बिशनोई, सिर्वी, पटेल, कल्बी और माली बड़े परिश्रमी किसान होते हैं। मीना, राजपूत और केमखानी लोग भी खेती करते हैं। भाम्बी और सरगर खेतों में मजदूरी करते हैं। लुहार और बढ़ई किसान के लिये हल आदि बनाते हैं।

बाजरा इस राज्य के लोगों का प्रधान भोजन है। यह बलुई भूमि में राज्य के प्रायः सभी भागों में वर्षा के आरम्भ में ही बो दिया जाता है। इसकी करबी कुछ नमकीन होती है अतः यह बहुत कम यहां जानवरों को खिलाई जाती है। यह घर छाने के काम आती है। ज्वार कुछ कड़ी भूमि में अधिक वर्षा होने पर होती है। यह बाजरा के साथ ही अक्तूबर या नवम्बर मास में काटी जाती है। कुछ जिलों में सिंचाई की सुविधा होने पर मक्का भी उगाते हैं। रबी की फसल का प्रधान अन्न गेहूँ है। जो गेहूँ कुओं के पानी से सींचा जाता है। उसे पीवल कहते हैं। जो गेहूँ खारे पानी से सींचा जाता है उसे खारचिया कहते हैं। जो गेहूँ मीठे पानी से सींचा जाता है उसे मिठानियां कहते हैं। अक्तूबर मास में गेहूँ बोया जाता है। पकने में पांच छः महीने लगते हैं। जौ भी इसी समय बोया जाता है। जौ को अधिक उपजाऊ भूमि की आवश्यकता नहीं होती है। चना कभी जौ के साथ मिलाकर और कभी अलग बोया जाता है।

बाली; देसुरी, बिलारा, मल्लानी जिलों में कपास अधिक

बोई जाती है। तेल के लिये गेहूँ के साथ सरसों और ज्वार बाजरा के साथ तिल बो देते हैं। अधिक नमी के निचले स्थानों में तरबूज उगाये जाते हैं।

आम, अमरूद, संतरा, केला, बेर और अनार इस राज्य के प्रधान फल हैं। गाजर, गोभी, मूली, प्याज, लहसुन, आलू, लौकी, लकड़ी आदि भी उगाते हैं।

पालतू पशुओं में ऊँट, गाय, बैल, भेड़ प्रधान हैं। ऊँट इस राज्य का बड़ा उपयोगी पशु है। यह बोझा ढोने हल जोतने और चढ़ने (सवारी) के काम आता है। मारवाड़ के ऊँट अधिक बड़े और मजबूत होते हैं।

मारवाड़ राज्य में ३४५ वर्गमील भूमि बन से ढकी है। अधिकतर बन अर्वली पर्वत के पश्चिमी ढालों पर है। बाली देसूरी, पर्वतसर, सोजात और सिवान में बन है।

सांभर झील से १२ मील की दूरी पर मकराना में संगमरमर की प्रसिद्ध खानें हैं। कुछ संगमरमर अर्वली प्रदेश में देसूरी के समीप सोनान आदि स्थानों में मिलता है। मकराना के संगमरमर से ही आगरे का ताजमहल बना। यहां लगभग २६ खानें हैं इनमें सिलवात मुसलमान काम करते हैं। खानों से जो संगमरमर निकलता है उस पर ८ आना प्रति मन का कर दरबार को मिलता है। इससे दरबार को प्रायः २०,००० रुपया वार्षिक आय हो जाती है।

बलुआ पत्थर बारमेर, जोधपुर (शहर) खातू, सोजात, तिवरी आदि स्थानों में बहुत है। कुछ पत्थर बहुत बढ़िया और बारीक दाने का होता है। तिवरी का पत्थर लाल और भूरा होता

है। जोधपुर शहर का पत्थर बैजना होता है। खातू का पत्थर पीला होता है। इस पत्थर की राज्य में १४० खानें हैं। यह इमारती पत्थर सर्व साधारण के काम का है। इसलिये जोधपुर दरबार इस पर नाम मात्र का कर (एक ऊँट पर लदे हुये पत्थर पर १ पैसा) लेता है। इससे राज्य को लगभग २००० रुपये वार्षिक आय होती है।

खादी या जिप्सम पत्थर के जोड़ों को भरने में सीमेंट का काम देता है। यह नागौर और उसके पड़ोस में पाया जाता है। यहां यह इतना अधिक है कि यह चूने से भी अधिक सस्ता है। और पत्थरों को जोड़ने के काम आता है थोड़ा सा जिप्सम फलौदी और बारमेर में भी पाया जाता है। टोकरियों को लटका कर मजदूर नीचे गढ़ों में उतरते हैं और वहां से खादी जिप्सम भर लाते हैं। लगभग ३० बेलदार प्रतिदिन यहां काम करते हैं और साल भर में पांच छः हजार टन जिप्सम निकाल लेते हैं।

मुल्तानी मिट्टी फलौदी जिले में और बारमेर में बहुत है। यह धरातल से पांच फुट से लेकर ८ फुट की गहराई तक मिलती है। यह साधारण चिकनी मिट्टी की भांति निकाली जाती है और गुजरात दक्षिण-भारत और उत्तरी भारतवर्ष को भेज दी जाती है। यह बढ़िया मिट्टी के बर्तन बनाने अथवा मूंड़ मींजने (बाल साफ करने) के काम आती है। यह चिकनाई को सोख लेती है। अर्वली प्रदेश में अभ्रक अस्बस्टास और दानेदार पत्थर भी बहुत है। सिवान के पास छप्पन का पहाड़ कच्चे लोहे के लिये प्रसिद्ध है।

सांभर, डीडवाना आदि झीलों में नमक बहुत है।

साधारण वर्षों में यहां पशुओं के चरने के लिये आवश्यक घास होती है। सूखा पड़ने पर घास कम हो जाती है। तभी पश्चिमी भाग के लोग अपने पशुओं को लेकर मालवा, सिन्ध और संयुक्त प्रान्त को चले जाते हैं। खेतों को सींचने के लिये इस राज्य में लगभग ५५००० कुएँ हैं। ३५००० पक्के और २००० कच्चे कुएँ हैं। ४१,००० कुओं में मीठा पानी है। शेष में खारा पानी है।

कुओं के अतिरिक्त इस राज्य में खेतों को सींचने के लिये ३५ बड़े बड़े ताल हैं।

ऊँट, गाय, बैल और घोड़ों की बिक्री के लिये राज्य में कई मेले लगते हैं।

पर्वत सर में भादों के महीने में तेजा जी का मेला लगता है। यह दस दिन तक रहता है। यहां १०,००० से अधिक दर्शक आते हैं। यहां बैल और गधे बहुत बिकते हैं। बालोतरा के पास तिलवारा गांव में चैत्री का मेला लगता है। यहां बैल ऊँट और घोड़े बहुत बिकते हैं। यहां पर्वतसर से भी अधिक मनुष्य आते हैं। मुँडवा आदि स्थानों में छोटे मेले लगते हैं। कुछ लोग अजमेर के पास पुष्कर के प्रसिद्ध मेले से ऊँट मोल ले आते हैं।

कला-कौशल

इस राज्य के निवासियों का प्रधान पेशा खेती है। ६२ प्रतिशत मनुष्य खेती में लगे हुये हैं। पर लुहार बढ़ई, मोची, तेली, जुलाहे प्रायः प्रत्येक बड़े गांव में हैं। मोटा सूती और

ऊनी कपड़ा राज्य के कई स्थानों में बुना जाता है। सूती कपड़ा छापने और रंगने का काम भी यहां बढ़िया होता है। परवा लोग साफे के लिये सुन्दर रेशमी फूल से माला बनाते हैं। जोधपुर शहर और नागौर के लुहार और ठठेरे लोहे और पीतल की ढलाई का काम भी अच्छा करते हैं। जोधपुर शहर की जामदानी कामदार चमड़े की थैलियां भी प्रसिद्ध हैं। नागौर और जोधपुर में गोटे का काम भी अच्छा होता है। नागौर में सितार के तार और नमदे बनते हैं। मेंड़ता में खसखस के पंखे, जालोर में फूल के लोटे, मकराना में संगमरमर के प्याले, तश्तरी और खिलौने बनते हैं। सोजात में लगाम और जीन, बारमेर में चक्कियां, और ऊँट का साज बनता है। जोधपुर शहर में बरफ बनाने का कारखाना और छापाखाना है। पाली, जोधपुर लूनी जङ्कशन और मेडता रोड में रूई और ऊन के गट्ठे बनाने की मीलें हैं। पाली और मेडता में हाथी दांत का भी सामान बनता है। समुद्र-तट और उत्तरी भारत के बीच में स्थित होने के कारण प्राचीन समय में मारवाड़ का व्यापार बढ़ा चढ़ा था। यहां पाली के बाजार में काश्मीर, उत्तरी भारत वर्ष और चीन का सामान बिकने आता था। बदले में यहां के बाजार में योरुप अफ्रीका, ईरान और अरब का सामान मिल जाता था। कच्छ और गुजरात के बन्दरगाहों से व्यापारी कारवां हाथी दांत, छुहारा, तांबा, गोंद, सुहागा, नारियल, चादर; रेशम, चन्दन, रंग, कपूर, मसाला आदि लादकर लाता था और यहां से छींट, मेवा, हींग, चीनी, अफीम, शाल, रंगीन कम्बल, हथियार, पोटाश और नमक ले जाता था। चारण (भाट) लोग आवश्य-

कता पड़ने पर अपना जीवन देकर व्यापारियों की रक्षा करते थे। आजकल पशु, कपास, चमड़ा, तिलहन, ऊन, हड्डी, नमक; संगमरमर, चक्कियां, और बलुआ पत्थर बाहर भेजा जाता है। चीनी, अफीम, गुड़, मेवा, धातु, गेहूँ, जौ, मक्का, चना, चावल, तेल लकड़ी, तम्बाकू और बुना हुआ कपड़ा बाहर से आता है। चुङ्गी और आयात और निर्यात कर से राज्य को लगभग १२ लाख रुपये की आय होती है। चीनी, बरेली, कानपुर चंदौसी और मुजफ्फर नगर से, अफीम कोटा और मेवाड़ से गुड़, बरेली, हाथरस और मेवाड़ से सूखा फल (मेवा) बम्बई भड़ौच और अहमदाबाद से चावल चन्दौसी और सिन्ध से धातु, मिट्टी का तेल और हाथी दांत बम्बई से, तम्बाकू, पानीपत मालवा और नदिया से कपड़ा अहमदाबाद, बम्बई, कलकत्ता और दिल्ली से, महुआ सिरोही से, गेहूँ, जौ, मक्का, चना सिन्ध, पंजाब और बम्बई प्रान्त से आता है।

भेड़ बकरी बम्बई, गुजरात और दीसा को, भैंस, गाय, बैल जैपुर को, ऊँट सिन्ध को, रुई बम्बई और ब्यावर को, चमड़ा बम्बई को तिलहन बम्बई, अहमदाबाद और ब्यावर को ऊन बम्बई और फ़ाजिल्का (पंजाब) को हड्डी बम्बई और कराची को नमक और संगमरमर भारतवर्ष के भिन्न-भिन्न भागों को और भारी बलुआ पत्थर समीपवर्ती राज्यों और जिलों को जाता है।

बालोतरा, बारमेर, जैतारन, जोधपुर, कुचावन, मेड़ता, मुंडवा, नागौर, नाव, पाली, पिपार रानी और सोजात राज्यों के प्रधान व्यापार केन्द्र हैं। महाजन बोहरा और ब्राह्मण व्यापार

में लगे हुये हैं।

व्यापार का ८० प्रतिशत माल रेल द्वारा आता है। शेष २० प्रतिशत ऊँट, बैलगाड़ी, गधे आदि पर लदकर जाता है।

इस राज्य में समस्त जनसंख्या की १/६ जनसंख्या जाट हैं। जाट राज्य के प्रायः सभी जिलों में पाये जाते हैं। पर जोधपुर मल्लानी, नागौर और पर्वतसर हूकूमतों में उनकी जनसंख्या बहुत है। कहते हैं शिव जी की जटा से इनकी उत्पत्ति हुई। असली जाट अपने को राजपूत कहते हैं। जाट लोग राज्य के सर्वोत्तम किसान हैं। वे बड़े बलवान और परिश्रमी होते हैं। जहां जाट वहां ठाट, यहां की साधारण कहावत है। जाटों के बालक प्रायः हलकी मूठ से खेलते हैं। वे वैष्णव होते हैं। जसनाथी जाट पीली पगड़ी बांधते हैं। वे अपने मुर्दों को जलाने के बदले गाड़ देते हैं। अधिकतर जाट अपने गले में चांदी का तावीज पहनते हैं। इसमें घुड़ सवार तेजा जी का चिन्ह रहता है। तेजा नागौर का एक वीर जाट था वह ढोर चुराने वाले मेर लोगों से बहुत लड़ा। वह सांप के काटने से मर गया। जाट लोग उसे बहुत मानते हैं। राज्य में १० प्रतिशत ब्राह्मण रहते हैं। जोधपुर जालोर, मेड़ता और नागौर जिलों में इनकी संख्या बहुत है। श्रीमाली सांचोर पालीवाल आदि इनके कई भेद हैं। कहते हैं श्रीमाली ब्राह्मण गुजरात के श्रीमाल (भीनमाल) नगर से आये थे। पुष्करन अजमेर के समीप पुष्कर झील से आये। पुरोहित या राजगुरु ब्राह्मणों की संख्या सबसे अधिक है। पाली नगर से सम्बन्ध रखने वाले ब्राह्मण पालीवाल कहलाने लगे।

राज के ९ प्रतिशत निवासी राजपूत हैं। इनमें ४ प्रतिशत

मुसलमान हैं। ९ प्रतिशत निवासी महाजन बनिया या वैश्य हैं। ओस्वाल महेश्वरी पोरवाल सराडगी और अग्रवाल इनके उप-भेद हैं। ओस्वालों में ९८ फीसदी जैन हैं। इनका आदि स्थान ओसी है। जिसके खंडहर जोधपुर शहर से ३० मील उत्तर की ओर है। अधिकतर ओस्वाल व्यापार करते हैं या सूद पर रुपया उधार देते हैं। इनमें बहुत थोड़े लोग दरबार की नौकरी करते हैं। महेश्वरी लोग हिन्दू हैं। यही व्यापार में लगे हैं। पोरवाल लोग गुजरात और पाटन नगर से आये। यहां आकर उन्होंने जैन धर्म ग्रहण कर लिया। सराडगी लोग भी जैन हैं। यह लोग अहिंसा के कट्टर मानने वाले हैं। वे सूर्यास्त से पहले ही भोजन कर लेते हैं और जीवहिंसा बचाने के लिये रात्रि में प्राय: दीपक नहीं जलाते हैं। अग्रवाल खान पान में बहुत शुद्ध रहते हैं।

राज्य में बलई या भाम्बी लोग ७ प्रतिशत हैं। यह नीच जाति के माने जाते हैं और सब कहीं मिलते हैं। वे चमड़ा कमाने, सफाई करने और मजदूरी का काम करते हैं।

रेबारी लोग केवल ३½ फीसदी हैं। वे ऊँट पालते हैं।

माली लोग ३ फीसदी हैं यह बड़े नगरों के समीप रहते हैं और शाक भाजी और फूल उगाने का काम करते हैं।

चाकर या गोला लोग राजपूतों की सेवा करते हैं। कुम्हार लोग २½ प्रतिशत हैं। यह मिट्टी के बर्तन बनाते हैं।

भील लोग मारवाड़ के कई जिलों में रहते हैं। यह खेती करते हैं। इनकी स्त्रियां लाख की चूड़ियां पहनती हैं।

विश्नोई लोग आरम्भ में जाट थे। हवन आदि २९ (बीस+नौ) संस्कारों के मानने से इनका नाम विश्नोई पड़ गया।

सिरवी लोग कई जिलों में पाये जाते हैं। यह लोग जोशियों से अपना ब्याह करते हैं। इनकी विधवायें फिर से ब्याह कर लेती हैं!

इस राज्य में लगभग डेढ़ लाख मुसलमान हैं। ईसाई लगभग ३०० हैं। ये लोग धोती या चूड़ीदार पाजामा, अंगरखा या कुरता और चोंचदार पगड़ी यहां के लोगों की प्रधान पोशाक है।

संक्षिप्त इतिहास

जोधपुर के महाराज राठोर वंशी राजपूत हैं। यह मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी के वंशज हैं। अतः यह सूर्य वंशी हैं। इनकी उत्पत्ति मनुवैवस्वत के पुत्र इक्ष्वाकु से हुई। मनुवैवस्वत या सूर्य के पुत्र थे। राठोर का प्राचीन नाम राष्ट्र है। अशोक के शिलालेखों में राष्ट्र का उल्लेख है। पांचवीं शताब्दी अभिमन्यु के समय से राष्ट्र कूटों का इतिहास अधिक स्पष्ट है। पांचवीं शताब्दी से ९७३ ई० तक राष्ट्र कूटों के दक्षिण में १९ राजा हुये। राष्ट्र कूट का अर्थ है, राष्ट्रों में सबसे ऊँचे या राष्ट्र शिरोमणि। दक्षिण राष्ट्र कूटों के राज्य का पश्चिमी भाग महाराष्ट्र या बड़ा राष्ट्र कहलाता था। इन्हीं के एक राजा ने आठवीं शताब्दी में अलोरा की गुफाओं में कैलाश मन्दिर बनवाया। इनके एक राजा ने दक्षिणी गुजरात और मालव प्रदेश जीता। अमोध वर्मा ने ६२ वर्ष तक राज्य किया और मान्यक्षेत्र (निज़ाम हैदराबाद के मालखंड स्थान) में अपनी राजधानी बनाई। उसके समय में दिगम्बर जैनों को प्रोत्साहन मिला। इस समय कृष्णा और गोदावरी के बीच में स्थित वेंगी राज्य के राजाओं से कई लड़ाइयां हुईं। दसवीं शताब्दी के अंत में दक्षिण के चौलक्य राजा ने राष्ट्र कूटों को हरा दिया। इसके पश्चात् राष्ट्र कूटों ने उत्तर की ओर कन्नौज में शरण ली। यहां आकर २५ वर्षों में उन्होंने अपने लिये स्थान बना लिया और गहरवार क्षत्रिय वंश की नींव डाली। उस वंश में ७ राजा हुये। जयचन्द इस वंश का अन्तिम राजा था। ११७० ई० में उत्तरी भारत दिल्ली और अजमेर में पृथिवी राज चौहान राजा था। कन्नौज में जयचन्द का राज्य था। जयचन्द ने अश्वमेध यज्ञ किया। अश्वमेध यज्ञ में

करद राजा सेवा कार्य करते हैं। इस यज्ञ में पृथिवी राज को ड्योढ़ीवान का काम सौंपा गया। यह पृथिवी राज को बुरा लगा और वह उपस्थित न हुआ। पृथिवी राज की अनुपस्थिति में उसकी मूर्तिद्वार पर खड़ी कर दी गई। इसी समय जयचन्द ने अपनी लड़की के व्याह के लिये स्वयम्बर किया। लड़की ने उपस्थित राजाओं में किसी को न पसंद करके पृथिवी राज की मूर्ति को जयमाल पहना दी। इतने ही में छिपे हुये पृथिवी राज ने उपस्थित होकर जयचन्द की लड़की को अपने घोड़े की पीठ पर पीछे बिठा लिया और वह दिल्ली जा पहुँचा। इस घटना से दोनों राज्यों में कई भीषण लड़ाइयां हुईं। आपस की फूट से दोनों राज्य निर्बल हो गये इसी समय मुहम्मद गोरी का आक्रमण हुआ। पहली बार गोरी की हार हुई। दूसरी बार गोरी और अधिक तयारी के साथ चढ़ आया। जयचन्द तमाशा देखता रहा। पृथिवी राज मारा गया। पृथिवी राज की मृत्यु के बाद सीमा पर जयचन्द के राज्य की रक्षा करने वाला कोई न रहा। ११९४ ई० में इटावा के युद्ध में गोरी सेना ने जयचन्द की सेना को छिन्न-भिन्न कर दिया। जयचन्द रणक्षेत्र से भागा और गंगा पार करते समय डूब गया। जयचन्द के निकट सम्बन्धियों ने गोरी के सामने सिर झुकाने को अपेक्षा राजपूताना के मरुस्थल में कठिन परिस्थितियों में जीवन बिताना अधिक श्रेयस्कर समझा। जयचन्द के भतीजे सिआह जी अपने २०० साथियों को लेकर द्वारका की तीर्थ यात्रा के लिये चल दिया। लौटते समय उसने वर्तमान जोधपुर राज्य के मल्लानी जिले के खेर स्थान को जीता फिर उसने १२१२ ई० में लूनी की पहाड़ियों पर राठोर झंडा

गाड़ा। इसी समय पाली के ब्राह्मणों को मेडमीना और भील सता रहे थे। ब्राह्मणों ने सिआह जी से सहायता मांगी। सिआह जी ने ब्राह्मणों की सहायता की। दूसरी बार यहां उन्होंने ब्राह्मण सरदारों को मारकर अधिकार कर लिया। इस प्रकार १२१२ ई० में जोधपुर राज्य को नींव पड़ी। इस घटना के एक वर्ष बाद सिआह जी की मृत्यु हो गई। उसके बड़े बेटे ने ईदर को जीता और भीलों को हराया। एक भाई ने सौराष्ट्र (काठिया वाड़) के कुछ भाग को जीता। इसी वंश के एक राजा के बेटे का नाम मल्लिनाथ था। इसी से इस राज्य के एक जिले का नाम मल्लानी पड़ा। १३८१ ई० में राव चोन्दा ने परिहार राजपूतों से मन्दोर छीन लिया। यहां ८० वर्ष तक राठोरों की राजधानी रही। फिर उसने नागौर जीत लिया। १४०८ ई० में उसकी मृत्यु हो गई। उसके १४ लड़के थे। रनमल गद्दी पर बैठा। उसने मारवाड़ राज्य में सब कहीं एक प्रकार की नाप और तोल चलाई। उसने अपना अधिकतर समय चित्तौड़ में बिताया। वहीं उसकी मृत्यु हो गई। १४४४ ई० में रनमल के मरने पर उसका बड़ा बेटा जोधा (योद्धा) गद्दी पर बैठा। जोधा ने १४८८ ई० तक राज्य किया। वह बड़ा शक्तिशाली और योग्य शासक था। १४५५ ई० में सोजात को जीतने के पश्चात् उसने १४५९ ई० में जोधपुर नगर की नींव डाली। यहीं उसने राजधानी बनाई। उसके १७ बेटे थे। उसके मरने पर उसका बड़ा बेटा सातल जोधपुर की गद्दी पर बैठा। उसका छठवां लड़का बीका बीकानेर राज्य का संस्थापक हुआ। उसका चौथा बेटा दूदा मेड़ता में रहने लगा। उसकी लड़की उदयपुर के राना कुम्भ को ब्याही थी। राव सातल

ने केवल ३ वर्ष (१४८८ से १४९१) तक राज्य किया। उसने पोकरन के पास उत्तर-पश्चिम में सातल मेर किला बनवाया। वह अजमेर के सूबेदार के साथ लड़ते लड़ते मारा गया। उसका भाई सूरजमल गद्दी पर बैठा। सूरजमल बड़ा वीर और स्त्रियों के सतीत्व की रक्षा करने वाला था। १५१६ ई० में पिपार के मेले में पठान लोग १४० राठोर राजकुमारियों को भगाये ले जा रहे थे। वीर राजपूत यह कब सह सकता था। कन्याओं को छुड़ाने के लिये वह पठानों से भिड़ पड़ा और उन्हीं से लड़ता हुआ वीर गति को प्राप्त हुआ। उसका पौत्र गङ्गा राजा हुआ। पर गंगा के चाचा सांगा ने गद्दी के लिये दौलत खां लोदी की सहायता मांगी। पर सांगा और उसके अफगान साथी मारे गये। दस वर्ष बाद मेवाड़ के राना संग्राम सिंह ने बाबर से लड़ने की तयारी की। राव गङ्गा ने राना संग्रामसिंह की अध्यक्षता मानने में कुछ भी अपमान न समझा और अपनी सेना उसके झंडे के नीचे मुगलों से लड़ने को भेज दी। पर देश की स्वाधीनता के लिये राजपूतों का संयुक्त मोर्चा १५२७ ई० में खनवा के युद्ध में विफल रहा। रावगंगा का पौत्र रायमल, मेड़ता के सरदार और दूसरे बहुत से राठोर योद्धा खेत रहे। स्वयं राव गंगा पांच वर्ष बाद स्वर्ग सिधारे। उसका बेटा मालदेव गद्दी पर बैठा। बाबर गङ्गा की उपजाऊ घाटी की ओर अपना राज्य बढ़ाने में लगा था। राजपूताने में मालदेव ने अपनी शक्ति बढ़ा ली और सब राजाओं से अधिक बलवान हो गया। उसके पास ८०,००० घुड़सवार थे। वह सभी लड़ाइयों में विजयी रहा। उसका राज्य राना संग्रामसिंह से भी अधिक हो गया। वर्तमान जोधपुर राज्य

के अतिरिक्त उसके राज्य में जैसलमेर, बीकानेर, अजमेर और जैपुर के कई भाग शामिल थे। उसके राज्य की सीमा आगरा और दिल्ली के समीप पहुँच गई थी। मारवाड़ अपनी समृद्धि राज्य विस्तार और स्वाधीनता के शिखर पर पहुँच गया था। अपने विस्तृत राज्य को दृढ़ बनाने के लिये मालदेव ने बहुत से किले बनवाये। उसने जोधपुर नगर में महल और बाहर की मजबूत चार दीवारी बनवाई और इसका नाम माल कोट रक्खा। उसने भाटों से पोकरन को जीत कर यहां किला बनवाया। उसने भद्राजन, सिवान, गूडोज, रियान, पिपार, दूनार और दूसरे स्थानों में किले बनवाये।

जब हुमायूं को शेरशाह ने हराया तो हुमायूं ने मालदेव की शरण पाने का बड़ा प्रयत्न किया। पर मालदेव ने तटस्थ रहना ठीक समझा। फिर भी शेरशाह १५४४ ई० में ८०,००० सेना लेकर मालदेव पर चढ़ाई की। पर अफगानी लोग राजपूतों की शक्ति को भली-भांति समझते थे। जहां कहीं अफगानी सेना रात्रि में पड़ाव डालती वहां सेना के चारों ओर खाईं और चार दीवारी रक्षा के लिये बना ली जाती थी। राजपूताना के रेगिस्तान में जहां दीवार बनाने की सुविधा न थी वहां बालू को थैलों में भर कर थैलों को एक दूसरे पर रख कर रक्षा के लिये थैलों की दीवार बना ली जाती थी। अजमेर की सीमा के पास मालदेव ५०,००० राजपूत घुड़सवारों को लेकर शेरशाह का सामना करने के लिये पहुँचा। कुछ अफगानों का कहना है कि उसके साथ ३ लाख सिपाही थे। दोनों सेनायें एक मास तक एक दूसरे के सामने पड़ी रहीं। इस बीच में कभी-कभी छोटी

टोलियों से मुठभेड़ हो जाती थी। इस समय राजपूत बड़े भीषण योद्धा थे। शेरशाह को रसद का कष्ट होने लगा। वह बड़ी खुशी से यहां से पीछे लौट जाता। पर लौटने से शान में बट्टा लगने के अतिरिक्त उसे भारी डर था कि उसकी लौटती हुई सेना को कहीं राजपूत सेना संकट में डाल कर नष्ट न कर दे।

पीछे लौटने में संकट था। खुल्लम-खुल्ला लड़ने में शेरशाह को विजय की आशा न थी। अतः अफगानों ने एक चाल चली। कहते हैं एक दो छोटे राजपूत सरदार भी उससे मिल गये थे। इनकी सहायता से मालदेव के सेनापतियों की ओर से उसने हिन्दी में एक बनावटी चिट्ठी अपने लिये इस आशय की लिखवाई कि राजा (मालदेव) ने हमें हरा कर हमारे प्रदेशों पर अधिकार कर लिया इससे अब तक तो हम लोग राजा की स्वामि भक्ति से सेवा करते रहे हैं। पर वास्तव में भेद यह है कि हम राजा के जुए से थक गये हैं। यदि आप (शेरशाह) हमें हमारा पुराना राज्य दिलवा दें तो हमें इसका उचित प्रत्युपकार करेंगे। इस चिट्ठी पर शेरशाह ने फारसी में कुछ शब्द लिख दिये इनका अर्थ यह था कि उनकी प्रार्थना स्वीकार कर ली जायगी। शेरशाह ने ऐसा जाल रचा कि यह चिट्ठी मालदेव के हाथ में पड़े। इस बनावटी चिट्ठी को राजा मालदेव ने सच मान कर उस युद्ध को टाल दिया। जिसे ठीक उसी दिन लड़ने का निश्चय किया गया था। राजपूतों को विजय का पूरा भरोसा था। जब वीर राजपूत लड़ने के लिये आग्रह करने लगे तो मालदेव को विश्वास घातक सन्देह और बढ़ गया। शीघ्र ही मालदेव ने अपनी सेना को पीछे लौटने की आज्ञा दी। राजपूत

सरदारों ने विशेष कर कुम्भ ने मालदेव को बहुत कुछ समझाया कि लौटने की भूल न करें। जब मालदेव ने उसकी बात न मानी तो राजपूतों की मान मर्यादा रखने के लिये कुम्भ ने अपने आठ दस सिपाहियों को लेकर शत्रु पर छापा मारने का निश्चय किया। उनका मार्ग ऊँचा नीचा था। उनके सिपाही दो भागों में बट गये। अधिकांश सिपाही मार्ग में भटक गये। केवल चार हजार राजपूत सिपाही सूर्योदय के समय शत्रु के पड़ाव पर पहुँच सके। शेरशाह ने तुरन्त इनसे लड़ने की तयारी की। मुट्ठी भर राजपूतों ने बार बार शेरशाह की अपार सेना को पीछे मार भगाया। इन वीरों की पूर्ण विजय होती। पर एक अफगान सेनापति (जलालखां) ताजे सिपाहियों की एक बड़ी सेना लेकर थके हुये राजपूतों पर टूट पड़ा। राजपूतों पर चारों ओर से तीरों की बौछार आने लगी। अन्त में कुम्भ अपने २००० पक्के राजपूत साथियों के साथ घिर जाने पर भी लड़ता हुआ वीर गति को प्राप्त हुआ। इन वीर राजपूतों ने अफगान सेना में ऐसी मार काट मचाई कि इस युद्ध के अन्त में शेरशाह ने कहा कि मैंने मुट्ठी भर बाजरे के पीछे दिल्ली का सिंहासन ही खो दिया था। इस बीच में मालदेव सिवान की ओर पीछे लौट रहा था। जब मालदेव को अपनी भूल कुम्भ और उसके साथियों की वीर बलि और अफगानों की चालाकी का पता लगा तो वह बहुत पछताया। पर अवसर बीत चुका था उसने अपनी भूल से भारतवर्ष से स्वाधीनता का यह स्वर्ण अवसर खो दिया। यदि कुम्भ के समान दूसरे वीर राजपूतों को भी अपना जौहर दिखाने का अवसर मिल जाता तो भारतवर्ष का

इतिहास ही दूसरा होता। मुट्ठी भर राजपूतों के अदम्य साहस से चकित होकर शेरशाह ने मालदेव को बचाकर दक्षिण की ओर चित्तौड़ की ओर निकल जाने में ही अपनी कुशल समझी।

१५५६ ई० में जब अकबर गद्दी पर बैठा तो उसने एक सेना भेजकर नागौर और अजमेर पर अधिकार कर लिया। कुछ समय तक यह स्थान अकबर के साम्राज्य की दक्षिणी-पश्चिमी सीमा बनाते थे। १५५८ ई० में उसकी एक सेना ने जैतारन का किला छीन लिया। १५६१ ई० में उसने मेडता का किला जीतने के लिये एक सेना भेजी। इस स्थान की रक्षा जगमल और देवीदास राठोर कर रहे थे। दोनों ओर से घोर संग्राम हुआ। अन्त में यह निश्चय हुआ कि राजपूत सिपाही अपने शस्त्र और घोड़े लेकर निकल जावें और खाली किले पर शाही सेना अधिकार कर ले। जयमल या जगमल तो अपने आदमियों के साथ बाहर चला गया। पर देवीदास के राजपूती अभिमान को ऐसा धक्का लगा और उसे ऐसी लज्जा आई कि उसने किले के सामान में आग लगा दी। फिर वह अपने राजपूत योद्धाओं के साथ शाही सेना के सामने से निकला। शाही सेना नायकों ने उसका पीछा किया। शाही सेना के बहुत से सिपाही मारे गये। २०० राजपूत सिपाही भी खेत रहे। दुर्भाग्य से स्वयं देवीदास घोड़े से गिर पड़ा। जब वह भूमि पर पड़ा हुआ था तो उसके टुकड़े टुकड़े कर डाले गये। कुछ लोगों का कहना है कि वह घायल तो हुआ पर वह भाग निकला।

१५६२ ई० में राव मालदेव का स्वर्गवास हो गया। इसके

पश्चात् राज्य में गृह कलह फैल गई। पहले उसका बड़ा बेटा उदयसिंह गद्दी पर बैठा। पर अन्त में छोटा भाई चन्द्रसेन राजा हुआ। शाही सेना ने उसके किले सिवान को घेर लिया। फिर उसने अकबर से मित्रता कर ली। १५८१ ई० में उसके मरने पर उसका बड़ा भाई उदयसिंह गद्दी पर बैठा। इस समय इस राज्य के इतिहास में एक अभूत पूर्व घटना हुई। इस राज्य ने प्रथम बार मुगल सम्राट का प्रभुत्व माना। उदयसिंह ने अपनी बहिन जोधबाई का ब्याह अकबर से कर दिया उसने अपनी बेटी मानबाई शाहजादे सलीम (जहांगीर) से ब्याह दी। अजमेर को छोड़कर उसे उसका खोया हुआ सब राज्य मिल गया। वह शाही सेना में १५०० का सेनापति बना दिया गया। वह मोटा राजा कहलाता था। उसने ओर्छा (बुन्देलखंड) और गुजरात की लड़ाइयों में मुगलों की बड़ी सहायता की। उसके ३४ बच्चे (लड़कियां और लड़के) थे। १५९५ में उसकी मृत्यु हो गई। उसका बड़ा बेटा सूरसिंह गद्दी पर बैठा। उसका बेटा किशनसिंह किशनगढ़ राज्य का प्रथम राजा हुआ। उसके बेटे केसरीसिंह ने अजमेर जिले में पिसान गांव जागीर की नींव डाली। उसके प्रपौत्र रत्नसिंह ने रतलाम राज्य की जड़ जमाई।

सूरसिंह बड़ा वीर और रण कुशल था। वह ५००० का मंसब दार बना दिया गया। उसने सिरोही और दक्षिण की लड़ाइयों में अकबर की बड़ी सहायता की। उसे सिरोही में ५ और दक्षिण में एक जागीर मिली। पर उसे अपने राज्य से दूर दक्षिण की ओर जाना अधिक पसन्द न था। दक्षिण में ही १६२० ई० में उसका देहान्त हो गया। उसका बड़ा बेटा
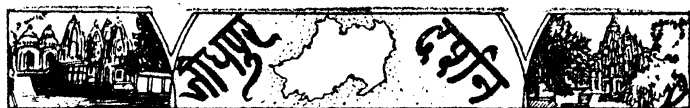
गजसिंह गद्दी पर बैठा। उसने जालोर को लेने और मेवाड़ के राना अमरसिंह से लड़ने में बड़ी वीरता दिखलाई और मुगल सम्राट की बड़ी सहायता की। वह भी ५००० का मंसबदार बना दिया। उसे बड़ी जागीर मिली। और वह दक्षिण का सूबेदार बना दिया गया। आठ लड़ाइयों और (किलों के) घेरों में उसके राठोर सिपाहियों ने ही अकेले विजय प्राप्त की थी। इससे राज गजसिंह को दलभंजन की उपाधि मिली। उसे सम्मानित करने के लिये उसकी घुड़सवार सेना के घोड़ों पर शाही निशान नहीं लगाये जाते थे। १६३८ ई० में उसकी मृत्यु हो गई। उसका बड़ा बेटा अमरसिंह बड़ा क्रोधी और झगड़ालू था। अतः उसे गद्दी का अधिकार नहीं मिला। उसका छोटा बेटा जसवन्तसिंह गद्दी पर बैठा। अपने शासन काल के प्रथम २० वर्षों में वह औरंगजेब के साथ गोंडवाना और दक्षिण की लड़ाइयों में लड़ता रहा। वह मेवाड़ का पहला शासक था। जिसे मुगल सम्राट की ओर से महाराजा की उपाधि मिली। १६५७ में जब शाहजहां बीमार पड़ा और शासन की बागडोर दारा के हाथ में आई। तब जसवन्त सिंह मालवा का सूबेदार बना दिया गया। जो सेना औरंगजेब और मुराद से लड़ने के लिये भेजी गई। उसका सेनापति जसवन्त सिंह ही था। वह अपनी बड़ी सेना लेकर नर्मदा की ओर गया और उज्जैन से १५ मील दक्षिण की ओर फतेहाबाद में उसने पड़ाव डाला। पहले औरंगजेब अपनी सेना लेकर सामने आया। औरंगजेब की सेना कम थी वह दूर से आने के कारण थकी भी थी। जसवन्त सिंह बड़ी आसानी से औरंगजेब की सेना को हरा सकता था। पर उसने जानबूझ कर

औरंगजेब पर आक्रमण नहीं किया। वह चाहता था कि औरंग-
जेब और मुराद को वह एक साथ एक ही दिन हरावे। जब
दोनों की सेनायें मिल गई। तब लड़ाई आरम्भ की गई। इसमें
जसवन्त सिंह की सेना को हारना पड़ा। इसमें उसके साथी
दूसरे शाही सेनापति कासिम खां का विश्वास घात बताया जाता
है। कासिम खां ने बहुत सी बारूद और लड़ाई के सामान को
बालू में छिपा दिया। जब मुराद अपने कुछ सिपाही लेकर नदी
को पार कर आया तब कासिम खां युद्ध क्षेत्र से भाग निकला।
जसवन्त सिंह बुरी तरह से घिर गया। उसके ८००० पक्के
साथी सिपाहियों में युद्ध के अन्त में केवल ६०० जीवित बचे।
इन्हें लेकर राजा अपने बाप को गद्दी से उतार दिया और स्वयं
बादशाह बन गया। सिंहासन पर बैठते ही औरंगजेब ने जसवन्त
सिंह को विश्वास दिलाया कि वह क्षमा कर दिया गया और
सेना में सम्मिलित होकर शुजा से लड़ने के लिये आग्रह किया।
१६५९ में शुजा का सामना करने के लिये फतेहपुर जिले में
खजुहा स्थान पर जो सेना एकत्रित थी उसमें जसवन्तसिंह भी
शामिल हो गया पर उसका उद्देश्य यह था कि औरंगजेब से
बदला ले। अतः लड़ाई आरम्भ होने से पहले ही उसने औरंग-
जेब की सेना के पृष्ट भाग पर आक्रमण किया और लूट का
सामान लेकर जोधपुर को लौट आया। वह दारा की सहायता
करना चाहता था। पर औरंगजेब ने जसवन्त सिंह को गुजरात
का सूबेदार बना दिया। इससे वह लड़ाई से अलग होकर उदा-
सीन हो गया।

इसके बाद जसवन्त को औरङ्गजेब ने दक्षिण में शिवा जी

से लड़ने के लिये भेजा। यहां जसवन्त सिंह ने शिवा जी से पत्र व्यवहार आरम्भ किया और शाही सेनापति शायस्ता खां के मरवाने का प्रयत्न किया। औरङ्गजेब ने जसवन्त सिंह को बुलवा लिया और उसके स्थान पर जैपुर के राजा जैसिंह को शिवा जी के विरुद्ध भेजा। जैसिंह शिवाजी को विश्वास दिला-कर दिल्ली ले आया। पर जब औङ्गजेब ने शिवा जी की हत्या करने की सोची तब जैसिंह ने शिवाजी को भाग जाने दिया। इसके बाद जसवन्तसिंह फिर दक्षिण की ओर भेजा गया। पर जसवन्त सिंह से शाहजादे मुअज्जम को अपने पिता औरङ्गजेब के प्रति विद्रोह करने के लिये प्रोत्साहित किया तब औरङ्गजेब युद्ध से अलग करने के लिये जसवन्तसिंह को फिर गुजरात का सूबेदार बना दिया। अहमदाबाद पहुँचने पर जसवन्त सिंह को औरङ्गजेब की चाल का पता लगा तो वह फिर वह अपने राज्य की ओर चला गया। औरङ्गजेब ताड़ गया कि खुल्लम खुल्ला जसवन्त सिंह को दूर देश भेजने का निश्चय किया। ठीक इसी समय काबुल (अफगानिस्तान) में विद्रोह उठ खड़ा हुआ। इस विद्रोह को दबाने के लिये जसवन्तसिंह को आज्ञा मिली।

अपने बड़े बेटे पृथिवी सिंह को जोधपुर का राज्य सौंपकर जसवन्तसिंह अपने परिवार के साथ काबुल पहुंचा। इसी बीच में औरङ्गजेब ने पृथिवी सिंह को दिल्ली बुला लिया। ऊपर से उसका बड़ा स्वागत किया। इनाम के रूप में उसे सम्मान की पोशाक दी। इस विषैली पोशाक को पहनते ही कुछ ही घंटों में अत्यन्त कष्ट पूर्वक पृथिवी सिंह का देहान्त हो गया। जब यह समाचार जसवन्त सिंह को मिला तो उसका बुरा हाल हो गया।

उसके दो बेटे अफगानिस्तान की विषम जलवायु के शिकार हो ही चुके थे। १६७८ के दिसम्बर मास में जमरूद में जसवन्त सिंह का देहान्त हो गया। जसवन्त सिंह का जीवन राजपूताने के इतिहास में एकदम असाधारण था। वह अपने समय से बहुत आगे था। उसमें अपूर्व योग्यता शक्ति और साहस था। वह औरङ्गजेब के कट्टर शत्रुओं (मेवाड़ के राना राजसिंह) अम्बेर के राजा जैसिंह; और शिवाजी को मिलाकर मुगल राज्य को पलट सकता था। वह खुले दिले दारा को चालाक औरङ्गजेब से अधिक पसन्द करता था। पर वास्तव में वह मुगल जाति को घृणा की दृष्टि से देखता था और उसे अपने धर्म और स्वाधीनता का शत्रु समझता था। उसने शाहजहां के कभी एक लड़के और कभी दूसरे लड़के की सहायता इसी उद्देश्य से की कि वे आपस में लड़कर नष्ट हो जावें और उसे स्वाधीनता मिले। इसी उद्देश्य से वह बार बार चालाक औरङ्गजेब की सूबेदारी स्वीकार करता रहा। चालाक और बलवान शत्रु के सामने उसे भी छल से काम लेना पड़ा। जसवन्तसिंह की मृत्यु के समय उसकी स्त्री के ७ महीने का गर्भ था। इसी से उसे सती होने से रोका गया। लाहौर पहुँचने पर अजीतसिंह का जन्म हुआ। जब रानी यात्रा करने योग्य हुई तो उसने घर के लिये प्रस्थान किया। औरङ्गजेब को जसवन्त सिंह के बड़े बेटे की जान लेकर पूरी तृप्ति नहीं हुई थी। वह जसवन्त सिंह के राज वंश को समूल नष्ट करना चाहता था। अतः जब रानी दिल्ली पहुँची तो उसे आज्ञा दी गई कि बच्चे को औरङ्गजेब को सौंप दे। रानी और बच्चे की रक्षा करने वाले राजपूत सरदारों को

मारवाड़ बांटकर बड़ी बड़ी जागीर देने का प्रलोभन दिया कि वे रानी को फुसलाकर बच्चा दिलवा दें। पर राजपूत सरदारों ने पूरी स्वामि भक्ति से रानी और शिशु राजा का साथ दिया। जब औरङ्गजेब ने जबरदस्ती बालक को छीनने का प्रयत्न किया तो इन वीरों ने जान हथेली पर रख कर दिल्ली की सड़कों पर इतिहास में अमर रहने वाला युद्ध किया। इसमें इन मुट्ठी भर शेरों ने मुगल सैनिकों को ऐसा पछाड़ा कि इनकी पूरी विजय हुई। यही नहीं इन्हें इतना समय भी मिल गया कि उन्होंने अपने शिशु राजा को मिठाई की टोकरी में जोधपुर राज्य में सिवान के पास की टोकरी में रखकर छप्पन के पहाड़ पर पहुँचवा दिया। वहां वह गुप्त रक्खा गया। औरङ्गजेब ने शीघ्र ही मारवाड़ पर चढ़ाई की। उसने जोधपुर शहर लूटा और उजाड़ा। उसने मारवाड़ के दूसरे नगर भी लूटे और उजाड़े। मन्दिर नष्ट कर दिये गये। उसने मस्जिदें बनवाई। उसने आज्ञा दी राठोर राजपूत मुसलमान कर लिये जायँ। पर राजपूतों को ज़बरदस्ती मुसलमान बनाने में वह दैव को चुनौती दे रहा था। फल यह हुआ कि सभी धर्म परायण और देश भक्त राज-पूत मिल कर एक हो गये। १६८० ई० में औरङ्गजेब का लड़का अकबर अपने बाप से अलग होकर राठोरों से मिल गया। इन्होंने दिल्ली के सिंहासन पर धावा करने में उसकी सहायता करने का बचन दिया था। पर औरङ्गजेब ने जाली चिट्ठी भिजवा कर फूट डलवा दी। अकबर को दक्षिण की ओर भागना पड़ा अगले छः वर्षों में राजपूतों और मुगलों में कहीं कहीं मुठभेड़ होती रही। १६८७ ई० में अजीत सिंह अपने गुप्त वास को छोड़कर

प्रगट हुआ। राजपूत सरदारों ने उसे अपना राजा मान लिया। १६८८ ई० में शाही सेना जोधपुर राज्य से भगा दी गई। १६९१ ई० में अजमेर के हाकिम को जोधपुर राज्य का प्रभुत्व मानने के लिये वाध्य किया गया। १६९४ ई० में अजीतसिंह को फिर पहाड़ियों में शरण लेनी पड़ी। १६९५ ई० में उसने मेवाड़ के राना जैसिंह की भतीजी से ब्याह किया। इसके बाद औरङ्गजेब को दक्षिण के युद्ध से कुछ भी अवकाश न मिला। राठोरों को सांस लेने का समय मिल गया अजीतसिंह ने अपने पूर्वजों के राज्य पर फिर अधिकार कर लिया। दो वर्ष बाद उसके कुछ सरदार शत्रु से मिल गये। आजमशाह ने जोधपुर छीन कर इस्लामी कट्टरपन दिखलाया। अजीत सिंह जालोर को चला गया यहां राजकुमार अभयसिंह का जन्म हुआ। कुछ ही समय में अजीतसिंह मेडता पर अधिकार कर लिया और दुनारा में शाही सेना को हराया।

१७०७ में अहमद नगर में राजपूतों पर संकट डालने वाले औरङ्गजेब की मृत्यु हो गई। २८ वर्ष के अत्याचारों का बदला लेने के लिये अजीतसिंह ने मुसलमान सूबेदार को भगाकर जोधपुर शहर पर अधिकार कर लिया। शाही सेना नष्ट कर दो गई। इसी समय औरङ्गजेब के बेटों शाह आलम और आजम शाह में आगरे के पास लड़ाई हो रही थी। इसमें शाह आलम (बहादुर शाह) की विजय हुई। बहादुर शाह ने अजीत सिंह के प्रति मित्रता प्रगट करने का ढोंग रचा और उसे फुसला कर शान्ति और मित्रता की सन्धि करने के बहाने उसे जोधपुर के बाहर बुलवा लिया। पर वास्तव में वह जोधपुर लेना चाहता

था। अतः उसने गुप्त रीति से एक सेना जोधपुर लेने के लिये भेज दी। इस विश्वास घात से तंग आकर अजीतसिंह बहादुर शाह को छोड़ कर उदयपुर की ओर चला गया। यहां १७०८ ई० मेवाड़ के राना अमरसिंह द्वितीय अम्बेर के राजा सवाई जैसिंह और अजीतसिंह ने मिल कर मुसलमानी राज्य के जुये को उतार फेंकने का निश्चय किया। वह ठहरा कि मुसलमान सम्राटों से विवाह सम्बन्ध करने के कारण जो जैपुर और जोधपुर का बहिष्कार कर दिया गया था। यह बन्द कर दिया जावे और तीनों राजपूत राज्यों में फिर से विवाह सम्बन्ध होने लगे। उदयपुर की राजकुमारी से जो पुत्र हो उसे दूसरे पुत्रों की अपेक्षा राजा बनने का अधिकार पहले मिले। यह निश्चय करके महाराजा अजीत और महाराजा जैसिंह ने मिलकर जोधपुर पर चढ़ाई की और जिस सूबेदार को बहादुर शाह ने यहां नियुक्त किया था उसे भगा दिया। उसके बाद दोनों राजा मेडता और अजमेर होकर सांभर झील के पास पहुँचे। यहां उन्होंने शाही सेना को बुरी तरह से हराया। दूसरे वर्ष उन्हों ने सम्राट को सन्धि करने के लिये बाध्य किया।

पर अभी अजीतसिंह के संकटों का अन्त नहीं हो पाया था। जब सैयद भाई दिल्ली में बलवान हो गये तो उन्होंने अजीत सिंह को सन्देश भेजा कि दिल्ली दरबार में सम्राट का प्रभुत्व स्वीकार करें और राज्याधिकारी बड़े बेटे को सम्राट की सेवा के लिये भेजे। अजीतसिंह ने ऐसा करने से इनकार कर दी। फलस्वरूप शाही सेना ने जोधपुर को घेर लिया। उसका

बड़ा बेटा दिल्ली ले जाया गया। उसे जजिया कर देना पड़ा। उसे गोवध सहन करना पड़ा। उसे स्वयं दिल्ली दरबार में उपस्थित होना पड़ा और अपनी बेटी सम्राट फर्रुखसियर को देनी पड़ी। इस विवाह और अपने शेष काल को बचाने वाले राजपूतों की समाधियां देखकर (जिन्होंने अपनी जान देकर उसे बचाया था) क्रोध से अजीतसिंह का खून उबलने लगा। पर समय उसके विपरीत था। अतः अपने पिता की तरह समझौता करके वह १७१५ में अपनी राजधानी को लौट आया। १७१९ ई० में फर्रुसियर मार डाला गया। अजीतसिंह अपने बेटे अभयसिंह को दिल्ली में छोड़कर अपनी विधवा बेटी को साथ लेकर जोधपुर को लौट आया। दूसरे वर्ष सैय्यद भाई मार डाले गये। अब अजीतसिंह को अजमेर सांभर झील डीडवाना झील और दूसरे स्थानों को अपने राज्य में मिलाने में कुछ भी कठिनाई न पड़ी। अजीतसिंह ने अपने नाम के सिक्के ढलवाये और अपने राज्य में नई नाप तोल चलाई। जो शाही सेना अजमेर लेने के लिये भेजी गई उसे अजीत सिंह ने बुरी तरह हराकर भगा दिया। पर १७२३ ई० में उसे अजमेर का किला मुहम्मद शाह के लौटाना पड़ा। इसी समय अभयसिंह को दिल्ली के दरबारियों ने ऐसा सुझाया कि मारवाड़ को सर्वनाश से बचाने के लिये यह आवश्यक है कि अजीतसिंह को मार डाला जाय। अभयसिंह की मति फिर गई। उसने अपने भाई को पिता का बध करने के लिये पत्र लिखा और उसे नागौर की जागीर और २०० गांव देने का बचन दिया। दुर्भाग्यवश

छोटे भाई बख्त सिंह ने पिता की हत्या कर डाली। बख्तसिंह की मां और दूसरी रानियां सती हो गईं। अजीत सिंह को प्रजा इतना प्यार करती थी कि कुछ मनुष्य भी उसकी चिता पर जल कर मर गये। ऐसा पिता बध का घोर अपराध मारवाड़ में पहले कभी नहीं हुआ था। अजीतसिंह बड़ा ही वीर और मेधावी राजा था। उसमें छल छिद्र की कमी थी। पर सैय्यद भाइयों से उसने काफी कूटनीति से काम लिया। उसने अपने बचपन के रक्षक युवावस्था के शिक्षक और प्रौढ़ावस्था के पक्ष आदर्शक परम त्यागी और देश भक्त दुर्गादास को राज्य से निर्वासित कर एक मात्र भूल अवश्य की थी।

अभयसिंह जोधपुर की गद्दी पर बैठा तब मुहम्मद शाह ने नागौर भी सनद में शामिल कर दिया। इसे अभयसिंह ने पिता का बध करने वाले बख्तसिंह को सौंप दिया। १७३० ई० अभयसिंह गुजरात और अजमेर का सूबेदार बना दिया गया। १७३१ ई० में उसने सरबुलन्दखां के विद्रोह को दबा कर अहमदाबाद पर अधिकार कर लिया। यहां उसे चार करोड़ रुपये हाथ लगे। इससे उसने अपने राज्य के किले दृढ़ करवाये। बख्तसिंह के दुर्व्यवहार से जैपुर और जोधपुर राज्यों में युद्ध छिड़ गया। पर उदयपुर के राना ने दोनों में शान्ति करवा दी। १७३९ में नादिरशाह ने दिल्ली पर आक्रमण किया। इस बार फिर जोधपुर और दूसरे राज्यों को आदेश मिला कि तैमूरवंश के लडखड़ाते हुये सिंहासन की सैनिक सहायता करें। इस पर कुछ भी ध्यान नहीं दिया गया। १७५० ई० में अभयसिंह की मृत्यु हो गई। बख्तसिंह राजा हुआ। पर १७५३ ई० में विषैली

वस्त्र पहनने से उसकी भी मृत्यु हो गई। उसका बेटा विजयसिंह गद्दी पर बैठा। पर उसका चचेरा भाई मरहठों की सहायता से एक सेना लेकर चढ़ आया। १७५६ ई० में मेड़ता के मैदान में लड़ाई हुई। विजयसिंह हार कर नागौर पहुँचा। रामसिंह की जीत हुई। विजयसिंह ने मरहठों से पीछा छुड़ाने के लिये एक राजपूत और एक अफगान सिपाही मरहठा सेनापति जै अप्पा का वध करने के लिये भेजे गये। पड़ोस में पहुँच कर उन्होंने आपस में घोर युद्ध करने का ढोंग रचा।

जै अप्पा उन्हें शान्त करने के लिये दोनों की बात सुनने लगा। इतने ही में दोनों ने एक साथ उसके छुरियां भोंक दीं। अफगान हत्यार तो पकड़ लिया गया। पर राजपूत भीड़ में छिप कर नाली के रास्ते से नागौर को भाग गया। नागौर घेर लिया गया। पर अन्त में समझौता हो गया। मरहठों ने अजमेर का किला और जिला लेकर रामसिंह का पक्ष छोड़ दिया। वे वहां से चले आये उन्हें त्रैवार्षिक कर मिलने लगा। १७७३ ई० में राम सिंह की मृत्यु हो गई। इससे विजयसिंह के कष्टों का अंत न हुआ। लड़ाई में उसके पूर्वजों का एकत्रित किया हुआ खजाना खाली हो गया। किसान दुःखी होकर इधर भागने लगे। ठाकुरों (राजपूत) सरदारों को अपनी शक्ति का घमंड हो गया। वे डींग मारने लगे कि उन्हीं के बाहुबल से जोधपुर राज्य मुगल साम्राज्य के चंगुल से बच सका। वे आपे से बाहर होने लगे। उनसे बचने के लिये विजयसिंह ने राजधानी की रक्षा के लिये सिन्ध में सिपाही भरती किये और अवा, पोकरन आदि के ठाकुरों को धोखे से मरवा डाला। कुछ ही समय में अराजकता

दूर हो गई। विजयसिंह ने ठाकुरों को नियन्त्रण में रखने के लिये उन्हें डाकुओं को दबाने में लगाया। राठोरों ने अमर कोट और जैसलमेर राज्य के कुछ भाग जीत लिये। मेवाड़ राज्य का उपजाऊ प्रान्त गोदवार भी मारवाड़ राज्य में मिला लिया गया। मरहठे अपना राज्य सभी ओर बढ़ा रहे थे। उनसे लड़ने के लिये राजपूताना के सभी राज्य मिलकर एक हो गये। मुगल सेना भी उनसे मिल गई। यह संयुक्त सेना लालसोह के पास टोंगा (जैपुर राज्य) में एकत्रित हुई। इस युद्ध में मरहठे हार गये। विजयसिंह को अजमेर मिल गया। उसने मरहठों को कर देना बन्द कर दिया। पर १७९० ई० में सिन्धिया मरहठों की भारी सेना लेकर फिर लौट आया। इस बार जैपुर राज्य में पाटन के पास उसने राजपूतों को कई लड़ाइयों में हराया। मेडता की लड़ाई में भी राजपूत हारे। जोधपुर राज्य पर ६० लाख रुपये का जुर्माना किया गया। और अजमेर ले लिया गया। फिर भी राज्य में समृद्धि रही। १७९३ ई० में विजयसिंह की मृत्यु हो गई। उसके छः बेटे थे। जालिमसिंह बड़ा था पर उसका पौत्र भीमसिंह राजा बन गया। भीमसिंह ने जालिम सिंह को राज्य के बाहर कर दिया। १७९९ ई० में जालिमसिंह मर गया। १८०३ ई० में भीमसिंह की मृत्यु हो गई। उसका चचेरा भाई मानसिंह जो १० वर्ष से जालोर के किले में घिरा हुआ था। राजा घोषित किया गया। इसी समय (१८०३ ई० में) मरहठों और अँग्रेजों में युद्ध छिड़ गया। ब्रिटिश कम्पिनी ने जोधपुर को अपनी ओर मिलाने के लिये विश्वास दिलाया। कि इस मित्रता के बदले भविष्य में जोधपुर राज्य से किसी प्रकार का

कर नहीं लिया जायगा। मानसिंह ने दूसरी शर्तें पेश कीं। इसी बीच में उसने होल्कर की सहायता कर दी। इसका फल यह हुआ कि १८०४ ई० में स्थापित संधि तोड़ दी गई।

भीमसिंह के बेटे धोंकल सिंह ने जोधपुर की गद्दी का दावा किया। इससे राज्य में गृहकलह आरम्भ हो गई। उदयपुर की राजकुमारी से विवाह करने के सम्बन्ध में जैपुर के राजा जगत सिंह से भी युद्ध छिड़ गया। जैपुर के राजा ने अमीर खां लुटेरे की सहायता से जोधपुर नगर को घेर लिया। घेरने वाले किले को तो न ले सके लेकिन जोधपुर नगर को उन्होंने लूट लिया। मानसिंह ने अमीरखां को अपनी ओर फोड़कर जैपुर पर आक्रमण किया और उसे लूटा। १८०६ में जोधपुर के घेरे को छोड़कर लूट का सामान लेकर जैपुर की सेना मरहठों के घर की ओर लौटने लगी। अमीरखां को भी ९ लाख रुपये की रिश्वत इस शर्त पर देने का बचन दिया गया कि उसके साथी मार्ग में लूट मार न मचावें। सीमा के पास कुचावन, अहोर जालोर और निजाम के राठोरों ने निश्चय किया कि जैपुर के कछवाहे जोधपुर के राठोरों का कोई सामान लूट कर जैपुर न ले जाने पावें। कछवाहे द्वारा लूट का सारा सामान छीन लिया गया और कुचावन में रक्खा गया। अमीरखां का जोधपुर में बड़ा स्वागत हुआ। विद्रोही राजपूतों को दबाने के लिये उसे ३ लाख रुपया पेशगी दिया गया। उससे विश्वास घात करके धोंकल के ४२ साथी ठाकुरों को १८०८ ई० में नागौर में मरवा डाला और उनके सिर मानसिंह के पास भिजवा दिये। इसी समय धोंकल सिंह को सहायता देने वाले बीकानेर राज्य पर

चढ़ाई की गई। बापरी के पास युद्ध हुआ बीकानेर की सेना हार कर पीछे लौटी। गजनेर में संधि हुई। बीकानेर को २ लाख रुपये देने पड़े और फलौदी नगर लौटाना पड़ा। अमीर खां का जोधपुर में जोर बढ़ गया। उसने नागौर को लूटा और वहां एक सेना नियत कर दी। जब वह जोधपुर आया तो उसे १० लाख रुपये और २ बड़े नगर मिले। इसे १०० रुपया दैनिक खर्च के लिये दिये जाने लगे। उसने मेड़ता का नगर अपने साथियों में बांट दिया और सांभर झील के रक्षक नाव नगर में सेना रख दी गई। अमीर खां ने राजा के मंत्री (दीवान) इन्द्रजी और उसके गुरू देवनाथ को मार डाला। मानसिंह क्षुब्ध होकर संयासी हो गया। उसका अकेला लड़का छत्रसिंह राजा हुआ। अमीरखां ने जोधपुर राज्य में मनमानी लूट मार मचाई। अंत में १९१७ ई० में वह इस राज्य को छोड़कर चला गया।

पिंडारी युद्ध के आरम्भ में ब्रिटिश सरकार ने छत्र सिंह से १८९८ ई० में सन्धि कर ली। इस राज्य से १,०८,००० वार्षिक कर निश्चित हुआ। आवश्यकता पड़ने पर १५०० घुड़सवार और प्रायः समस्त सेना ब्रिटिश सरकार की सहायता के लिये भेजने का निश्चय हुआ। इस प्रकार यह राज्य ब्रिटिश संरक्षकता में आ गया। इस संधि को समाप्त होने पर छत्रसिंह की मृत्यु हो गई। उसके पिता मानसिंह ने राज्य भार फिर अपने हाथ में ले लिया। उसकी अनुपस्थिति में जिन ठाकुरों ने उसके प्रति द्वेषभाव प्रदर्शित किया था उनकी जागीरें जब्त कर ली गई। यह लोग भागकर ब्रिटिश दरबार में गये। मानसिंह की जब्त की हुई जागीरें फिर १८२४ ई० में लौटानी पड़ी। १८२७ ई० में

कुछ ठाकुरों ने फिर विद्रोह किया। धौंकल सिंह को अपना नेता बनाकर इन्होंने जैपुर राज्य में सेना एकत्रित की। पर अन्त में जैपुर राज्य पर ब्रिटिश दबाव पड़ा और सेना छिन्न भिन्न हो गई। १८३९ ई० में ब्रिटिश सरकार ने जोधपुर राज्य में हस्तक्षेप किया। एक ब्रिटिश सेना ने जोधपुर नगर पर अधिकार कर लिया। पांच बर्ष तक यहां ब्रिटिश सैनिक शासन रहा। १८४३ ई० में मानसिंह का देहान्त हो गया। उसके कोई बेटा न था। रानी और ठाकुरों की सम्मति से अहमद नगर का सरदार जोधपुर का राजा बनाया गया। राजा तख्त सिंह का शासन अच्छा न था। पर उसने गदर में अंग्रेजों की बड़ी सहायता की। रेलवे बनाने के लिये उसने ब्रिटिश सरकार को आवश्यक भूमि दे दी।

१८७० ई० में उसने सांभर झील ब्रिटिश सरकार को पट्टे पर दे दी। इसी वर्ष लार्ड मेयो ने अजमेर में दरबार किया। पहले जाने के विषय में उदयपुर के महाराना और तख्त सिंह में मतभेद हो गया। तख्त सिंह ने दरबार में जाने से इनकार कर दी। पोलिटिकल एजेन्ट और उसके बेटे ने उसे बहुत समझाया। एक घंटे तक दरबार रुका रहा। अन्त में उसके बिना ही दरबार हुआ। दूसरे दिन उसे अजमेर छोड़ने की आज्ञा दी गई और उसकी सलामी की तोपों की संख्या कम कर दी गई। पर दरबार के अंत में वायसराय जोधपुर के राजकुमार से अच्छी तरह मिला। १८७३ ई० में महाराजा तख्त सिंह की मृत्यु हो गई। उसका बड़ा बेटा जसवन्त सिंह द्वितीय गद्दी पर बैठा। डाकुओं को दबाया गया। १८८३ ई० में राज्य की सीमा के पास

झगड़ालू ठाकुरों को दबाया गया। राज्य की सीमा निर्धारित की गई और राज्य में न्यायालय स्थापित किये गये। राज्य के करों में सुधार हुआ। बन विभाग स्थापित किया गया। रेलवे खुल गई। डाकघरों और स्कूलों की संख्या बढ़ गई। महाराज जसवन्त सिंह ने ब्रिटिश सरकार के प्रति बड़ी राजभक्ति प्रगट की। १८९५ ई० में उनकी मृत्यु हो गई। उसका एकलौता बेटा महाराजा सरदारसिंह गद्दी पर बैठा। महाराजा सरदारसिंह ने १८९८ ई० में एक (सरदार रिसाला) उत्तरी पश्चिमी सीमा प्रान्त और १९०१ ई० में चीन में ब्रिटिश साम्राज्य की ओर से लड़ने के लिये भेजा। जोधपुर राज्य में होकर सिन्ध हैदराबाद तक रेल बनी।

हुकूमत (जिले) और नगर

बाली जिला राज्य के दक्षिण पूर्व में स्थित है। इसका क्षेत्रफल ८३७ वर्ग मील है। इसमें एक चौथाई खालसा है। इसका दरबार की ओर से सीधा प्रबन्ध होता है। इस जिले की जनसंख्या १ लाख है। इसमें १६० गाँव हैं। जिले में कुओं की अधिकता है। गेहूँ, जौ और कपास की खेती होती है। प्रधान नगर बाली है। बाली नगर समुद्र-तल से १०१३ फुट की ऊँचाई पर मित्री नदी के बायें किनारे पर स्थित है। यह फलना रेलवे स्टेशन से ५ मील दक्षिण-पूर्व की ओर है। नगर की जन-संख्या लगभग ६००० है। यह एक चार दीवारी से

घिरा है। यहां एक किला है। यहां डाकघर, अस्पताल, मिडिल स्कूल और महाजनी स्कूल हैं। मोकल माता का मन्दिर ११५९ ई० में कुमार पाल चौलुक्य ने बनवाया था। जैन मन्दिर पर ११८७ ई० का लेख है। त्रिजपुर गांव के पास हस्तिकुण्डी नाम के प्रधान नगर के भग्नावशेष हैं। यह राठोरों का आदि स्थान है। यह ९९७ ई० का एक शिला लेख है।

बिलारा हुकूमत राज्य के पूर्वी भाग के मध्य में स्थित है। इसका क्षेत्रफल ७९२ वर्गमील है। इसमें ¼ खालसा है। शेष में जागीरदारों और दूसरों का अधिकार है। इस जिले की जन संख्या लगभग ६०,००० है। जोजरी नदी जिले के बीच में होकर बहती है। लूनी नदी दक्षिणी भाग में होकर बहती है। पिचियाक के पास इस नदी में बांध बनाकर जसवन्त सागर तयार कर लिया गया है। इसके आगे भूमि उपजाऊ है और पानी की कमी नहीं है। यहां २१० वर्ग मील भूमि खेती के लिये उपलब्ध है। इसमें ७० वर्गमील भूमि कुओं से सींची जाती है। ज्वार, बाजरा, मक्का, गेहूँ, जौ, चना, कपास, तिलहन, मंडुआ और तम्बाकू की खेती होती है। पिचियाक और माल कोसनी में घटिया नमक बनाया जाता है।

इस जिले का प्रधान नगर बिलार है। यह नगर रायपुर लूनी के बायें किनारे पर स्थित है। यह जोधपुर से ४५ मील पूर्व में है। चन्दावल और गुरिया स्टेशन से यह २० मील उत्तर पश्चिम की ओर है। कहते हैं राजा बालि ने इसे बसाया था। यह नगर एक चार दीवारी से घिरा है। यहां डाकघर, स्कूल, अस्पताल और मारवाड़ी पोसाल हैं। तीन मील उत्तर

की ओर बानगंगा नदी के किनारे पर मार्च में मेला लगता है। कहते हैं गंगा देवी ने एक बार राजा बालि से स्वप्न में कहा कि यदि अमुक स्थान पर बाण छोड़ो तो मैं प्रगट हो जाऊँगी। दूसरे दिन राजा ने बाण छोड़ा वहां नदी बहने लगी। इसी से कुछ लोग इसे गंगा के समान पवित्र मानते हैं।

पिपार नगर लूनी की सहायक जोजरी नदी के बायें किनारे पर स्थित है। यह जोधपुर शहर से ३२ मील पूर्व में जोधपूर-बीकानेर रेलवे की पिपार रोड स्टेशन से ७ मील दूर है। पिपार की जन संख्या प्राय: ७००० है। यह कच्ची चार दीवारी से घिरा है। यहां का रंगा हुआ कपड़ा प्रसिद्ध है। यहां एक छोटा किला, चार स्कूल, और डाकघर हैं। यहां एक कुंड और कई प्राचीन मन्दिर हैं। विष्णु मन्दिर आठवीं शताब्दी का है। पिपार को एक पालीवाल ब्राह्मण ने अब से २००० वर्ष पूर्व बसाया था। यह ब्राह्मण झील के किनारे पर बसने वाले एक नाग को प्रति दिन भोजन चढ़ाया करता था। नाग देव ब्राह्मण को २ मुहरें देता था। एक दिन ब्राह्मण को नागौर जाना पड़ा। उसने नाग देव को भोजन कराने का कार्य अपने बेटे को सौंपा। कोष पर अधिकार करने की इच्छा से ब्राह्मण का बेटा अपने साथ एक डंडा भी ले गया। जब नाग नियत समय पर भोजन करने के लिये निकला तो बालक ने नाग को बड़े जोर से डंडा मारा। नाग घायल होकर बिल के भीतर घुस गया। दूसरे दिन लड़के की चारपाई पर विशाल नाग लिपटा हुआ था। मां बहुत डरी। पर पीपा ब्राह्मण ने नाग को नियम पूर्वक दूध पिला कर शान्त

कर लिया। अन्त में नाग ने ब्राह्मण को वह स्थान बतलाया जहां सोना गड़ा था और एक मन्दिर बनवाने का आदेश दिया।

देसुरी हुकूमत का जिला राज्य के दक्षिण पूर्व में स्थित है। इसका क्षेत्रफल ७०६ वर्ग मील है। इसकी जनसंख्या प्रायः ६८००० है।

देसुरी गांव इस जिले का केन्द्र स्थान है। समुद्र तल से १५८७ फुट की उँचाई पर सुकी नदी के दाहिने किनारे पर स्थित है। यह ज्वालिया स्टेशन से १८ मील दक्षिण पूर्व की ओर है। देसुरी गांव एक पहाड़ी की तलहटी में बसा है और एक चार दीवारी से घिरा है। पहाड़ी की चोटी पर एक किला बना है। यहां डाकघर, स्कूल और अस्पताल है। रानापुर में प्रसिद्ध जैन मन्दिर है।

नाडोल गांव ज्वालिया रेलवे स्टेशन से ८ मील दूर है। यह पहले गोडवार की राजधानी थी। यहां २०० वर्ष तक चौहानों ने राज्य किया। फिर कुतुबुद्दीन ने उन्हें भगा दिया। अठारहवीं शताब्दी तक यहां उदयपुर के राना का अधिकार रहा। फिर यह गोडवार प्रदेश के साथ जोधपुर राज्य को मिल गया। यह गांव एक चारदीवारी से घिरा है। पश्चिम की ओर एक पुराना किला है। इसके भीतर एक बहुत सुन्दर जैन (महावीर) मन्दिर है। मन्दिर का पत्थर यहां से आठ मील दूर सोनान की खानों से आया था। मन्दिर पर बढ़िया कारीगरी है। बेतल का स्थान नाम का मन्दिर बहुत पुराना है। सोमेश्वर महादेव और सोम-

नाथ के मन्दिर पर ११४१ और ११५६ के शिला लेख हैं। पूर्व की ओर जूना (प्राचीन) खेड़ा है।

रानापुर या रामपुरा में प्रसिद्ध जैन मन्दिर है। यह फालना स्टेशन से १४ मील पूर्व की ओर है। मन्दिर का चबूतरा २२५ फुट लम्बा और २०० फुट चौड़ा है। यहां चारों ओर २० गुम्बद हैं जो ४२० खम्भों पर सधे हैं। मध्यवर्ती गुम्बद तिमंजिला है।

देसूरी जिले का एक मात्र बड़ा नगर सादड़ी है। यह अरावली पवत के पास बसा है। यहां से उदयपुर राज्य की सीमा समीप ही है। इसकी जनसंख्या ७००० है। यहां डाकघर, अंग्रेजी स्कूल, पोशाल। और राना अमर सिंह की बनवाई हुई बाउली है। यहां कई सुन्दर मन्दिर हैं। महादेव के मन्दिर पर १०८६ का लेख है।

डीडवाना हुकूमत—यह जिला राज्य के उत्तरी-पूर्वी भाग में स्थित है। इसका क्षेत्र फल ११३६ वर्गमील है। इसमें २०० वर्ग मील खाल्सा है। इसकी जन संख्या लगभग ४५००० है। इस जिले की भूमि बलुई है। कुओं में प्रायः खारा पानी मिलता है। खेती के योग्य अधिकतर भूमि में बाजरा होता है। कुछ भाग में ज्वार, जौ और गेहूँ होता है। इस जिले का प्रधान नगर डीडवाना है। यह जोधपुर से १३० मील उत्तर पूर्व की ओर और मकराना स्टेशन से ३० मील उत्तर पश्चिम की ओर है। इसकी जन संख्या १०,००० है। यह नगर बहुत पुराना है। २० फुट नीचे या कुआं खोदते समय पुराने चिन्ह मिलते हैं। एक बार सम्बत् २५२ ई० की मूर्ति मिली। इसका पुराना नाम द्रुदवानक था। यहां चौहान का राज्य था। यह पत्थर की एक चार दीवारी से घिरा है

यहां डाकघर, अस्पताल और एंग्लो वर्नाक्यूलर स्कूल है। यहां कई प्राचीन मन्दिर और अकबर के समय की एक मस्जिद है। नगर के दक्षिण पश्चिम की ओर प्रसिद्ध झील है जिससे नमक निकाला जाता है।

जैतारन हुकूमत—राज्य का पूर्वी जिला है। इसका क्षेत्रफल ९५९ वर्ग मील है। इसमें लगभग ५० मील खालसा है। जिले की जन संख्या ७०,००० है। लूनी नदी इसके उत्तरी भाग में बहती है। अर्बली से निकलने वाली लिलरी और रायपुर लूनी नदियां भी इस जिले में होकर बहती हैं। अर्वली पर्वत इसकी पूर्वी सीमा पर स्थित है। इस जिले की भूमि उपजाऊ है। मीठे पानी के कुएँ बहुत हैं। ज्वार, बाजरा, गेहूँ, जौ और चना की फसल होती है।

इस जिले का प्रधान नगर जैतारन है। यह जोधपुर शहर से ५६ मील पूर्व की ओर स्थित है। बर स्टेशन १४ मील उत्तर पश्चिम की ओर है। यहां एक किला, डाकघर और मिडिल स्कूल है। निमाज इसी नाम की जागीर का प्रधान नगर है। यह हरिपुर रेलवे स्टेशन से १० मील उत्तर की ओर जोधपुर शहर से ६० मील दक्षिण पूर्व की ओर है। यहां एक छोटा स्कूल है। रास, अगेवा और रायपुर इस जिले की प्रसिद्ध जागीरें हैं।

जालोर हुकूमत—राज्य का दक्षिणी और दक्षिणी पूर्वी जिला है। इसका क्षेत्रफल १५५२ वर्ग मील है। इसमें १६५ मील खालसा है। इस जिले की जन संख्या १४१००० है। इस जिले का अधिकतर भाग चपटा और रेतीला है। यहां दो पहाड़ियां

हैं। एक पहाड़ी (२४०८) फुट ऊँची जालोर नगर के पश्चिम में है दूसरी २७५७ फुट ऊँची, पहाड़ी उत्तर पूर्व की ओर है। जवई नदी, लूनी से मिलने के लिये जिले के बीच में बहती है। इस जिले की भूमि प्रायः उपजाऊ है। बाजरा, ज्वार, गेहूँ, जौ, तिल, और कपास की फसलें होती हैं। जालोर इस जिले का प्रधान नगर है यह सुकी नदी के बायें किनारे पर स्थित है। ऊपरी भाग में इस नदी को जवई कहते हैं। यह नगर जोधपुर शहर से ७५ मील दक्षिण की ओर है। यहाँ डाकघर, अस्पताल और इंगलिश स्कूल है। यहाँ गाढ़ा, जीन और फूल के बर्तन लोटे अच्छे बनते हैं। दक्षिण की ओर पहाड़ी पर किला बना है। यह राजपूताने के प्रसिद्ध किलों में एक है। यह ८०० गज़ लम्बा और ४०० गज़ चौड़ा है। किले में पहुँचने के लिये ३ मील ऊपर चढ़ना पड़ता है। किले के भीतर पीने योग्य पानी के २ ताल बने हैं। यहाँ सुन्दर महल और मन्दिर बने हैं। बारहवीं शताब्दी तक यहाँ परमार राजपूतों का राज्य रहा। फिर चौहानों का अधिकार हो गया १२१० ई० में शम्सुद्दीन अल्तमश। को यह सौंप दिया गया पर १०० ऊँट और बीस घोड़े लेकर उसने इसे फिर उदयसिंह को लौटा दिया। इसके प्रायः १०० वर्ष बाद अलाउद्दीन ने यहाँ लम्बा घेरा डाला और अन्त में इस पर अधिकार कर लिया। १५४० ई० में राजा मालदेव ने इस किले पर अधिकार कर लिया। कुछ समय बाद सम्राट अकबर का यहाँ अधिकार होगया। १६८९ ई० में मारवाड़ के राठौरों ने इस पर अधिकार

कर लिया। औरङ्गजेब के मरने पर १७०७ ई० में यह जिला और किला जोधपुर राज्य का अंग बन गया।

भद्राजन गाँव इसी नाम की जागीर का प्रधान स्थान है। यह जोधपुर शहर से ५० मील ठीक दक्षिण की ओर है। इसका पुराना नाम सुभद्रा-अर्जुन नगर है। कहते हैं सुभद्रा माता का मन्दिर पांडवों के समय का बना है। यहां एक छोटा किला और कुंड है।

हुकूमत—यह जिला राज्य के दक्षिण में स्थित है। इसका क्षेत्र-फल १३६० बर्ग मील है। प्रायः ; भाग खालसा है। इसकी जन संख्या ८५००० है। जिले का उत्तरी भाग चपटा और रेतीला है। इसका दक्षिणी भाग कटा फटा ऊँचा नीचा और जंगली है। कहीं पहाड़ियाँ हैं और कहीं गहरे सूखे नाले हैं। इस ओर चीते और काले भालू मिल जाया करते हैं। बाजरा और तिल इस जिले की प्रधान उपज है। जसवन्तपुर गाँव इस जिले की राजधानी है। यह गाँव एक पहाड़ी की तलहटी में में आबू रोड स्टेशन से ३० मील उत्तर पश्चिम की ओर है। यह गाँव १८८४ ई० में उस स्थान पर बसा जहाँ लोहियाना गाँव था। यह गांव ठाकुर और भीलों की लूट मार के कारण गिरा दिया गया। जसवन्तपुर में डाकघर और स्कूल है। पश्चिम की ओर चामुण्डा देवी का मन्दिर बना है। यह १२६२ ई० में बना। सुण्डा पहाड़ी समुद्र तल से ३२५२ फुट ऊँची है। पर पहाड़ी के जिस भाग पर मन्दिर बना है वह केवल १४०० फुट ऊँचा है।

भीनमाल नगर [जनसंख्या ५०००] जोधपुर शहर से १०५ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर है। आबू रोड से ५० मील उत्तर-पश्चिम की ओरहै। यहां डाकघर अस्पताल, स्कूल और मारवाड़ी पोशाल है। यहां फूल के बर्तन अच्छे बनते हैं। इसका पुराना नाम श्रीमाल या भिल्लमाल है। छठी और नवीं शताब्दी के बीच में यह गुर्जरों की राजधानी रहा। दक्षिण की ओर गुजराती दरवाजा उस समय की स्मृति दिलाता है। यहां कई प्राचीन मन्दिर और कुएं हैं। इन में कुछ पर संस्कृत के प्राचीन शिलालेख खुदे हैं।

जोधपुर हुकूमत—यह जिला राज्य के प्रायः मध्य में है। इसका क्षेत्रफल २८८६ वर्गमील है। इसमे ⅕ भाग खालसा है। इस जिले की जनसंख्या २,४०,००० है। जिले के आधे भाग में कुओं की कमी नहीं है। रबी और खरीफ दोनों फसलें अच्छी होती हैं। इस जिले की बालू मिश्रित मटियारी और भूरी मिट्टी साधारणतः उपजाऊ है। राजधानी के समीप और तिवरी और अन्य स्थानों में घर बनाने के लिये बलुआ पत्थर पाया जाता है। जिले के कई गाँव कपड़ा रंगने और छापने के लिये प्रसिद्ध हैं।

जोधपुर नगर २६°१८ उत्तरी अक्षांश और ७३°१ पूर्वी देशान्तर में स्थित है। यह रेल द्वारा दिल्ली से ३८० मील बम्बई से ५९० मील और कलकत्ते से १३३० मील दूर है। इस नगर की जनसंख्या लगभग ८०.८००० है। इस नगर को १४५० ई० में राव जोधा ने बसाया था। जिस पहाड़ प

उसकी तलहटी में यह नगर घोड़ों के नाल के आकार में बसा है। नगर का क्षेत्रफल वर्गमील है। चारदीवारी २४६०० फुट लम्बी है। भीतर प्रवेश करने के लिए ६ दरवाज़े हैं। इनमें तेज़ नुकीली कीलें गड़ी हैं जिससे हाथी फाटकों को न तोड़ सकें। ५ दरवाज़े जालोर, मेड़ता, नागौर, सिवान, और सोजत नगरों की सीध में हैं और उन्हीं के नाम से प्रसिद्ध हैं। एक दरवाज़ा चांदपोल इसलिए कहलाता है कि नया द्विज का चन्द्रमा इसी सीध में निकलता है।

नागौरी दरवाज़े के पास जैपुर और बीकानेर की सेनाओं के छोड़े हुए तोप के गोलों के चिन्ह हैं। इन्होंने १८०६ ई० में धोंकल सिंह की सहायता के लिये जोधपुर पर चढ़ाई की थी। अन्त में प्रसिद्ध डाकू अमीर खां जोधपुर के राजा मानसिंह से आ मिला। इसलिये जैपुर और बीकानेर की सेनाओं को हानि उठाकर पीछे लौटना पड़ा।

जोधपुर का किला राजस्थान भर में विख्यात है। यह अपने ढङ्ग का बड़ा सुन्दर बना है। यह किला मैदान के ऊपर ४०० फुट ऊंची खड़ी अकेली पहाड़ी पर बना है। यह बड़ी दूर से दिखाई देता है। किले की दीवार २० फुट से १२० फुट तक ऊंची और १२ फुट से लेकर ७० फुट तक मोटी है। यह किला आयताकार भूमि में बना है। इसकी लम्बाई ५०० गज़ और चौड़ाई २५० गज़ है। इसमें प्रवेश करने के लिए उत्तरी पूर्वी कोने पर जयपोल और दक्षिणी पश्चिमी कोने पर फतेहपोल नाम के दो द्वार हैं। फतेहपोल को महाराजा अजीत सिंह ने औरंगजेब के मरने के पश्चात बन-

वाया था। जैपोल को महाराजा मानसिंह ने बनवाया था। १७०८ ई० में किले के भीतर फतेह महल भी महाराजा अजीतसिंह ने बनवाया था। यह महल मुगल सूबेदार को भगाने और मुगलों पर विजय (फतह) प्राप्त करने के उपलक्ष में बनवाया गया था। इस किले में रानी सागर से पानी आता है। पानी नल द्वारा इंजन के ज़ोर से ४०० फुट ऊंचा चढ़ाया जाता है। इस ताल को राव जोधा की रानी ने बनवाया था। किले के भीतर दो कुएं भी हैं। पातालिया कुंआ ४५० फुट गहरा है। दूसरा कुआं इससे भी अधिक गहरा है।

नगर में पुराना मठ ठाकुरों के महल, जसवन्त कालेज, और मन्दिर बड़े भव्य हैं। यहां की सड़कें बड़ी चौड़ी हैं। इन पर पत्थर जड़े हुये हैं दोनों ओर नालियां बनी हैं। कहीं कहीं पेड़ लगे हैं। नगर से आध मील उत्तर पूर्व की ओर महा मन्दिर नाम का चारदीवारी से घिरा हुआ मार्ग है। यहां एक पुराना मन्दिर है।

शिक्षा में जोधपुर राजपूताना के दूसरे नगरों से बहुत आगे बढ़ा है। महाराजा कालेज के अतिरिक्त यहां कई स्कूल हैं। औसत से जितने पढे लिखे मनुष्य यहां मिलते हैं उतने किसी और राजस्थान के नगर में नहीं मिलते हैं। कराची और दिल्ली के बीच में जोधपुर की स्थिति हवाई जहाजों के लिये बड़ी अच्छी है। नगर के बाहर हवाई जहाजों की सुविधा के लिये एरोड्रोम (हवाई स्टेशन) बना है।

मंडोर या मन्दोदर नगर जोधपुर शहर से ५ मील उत्तर

की ओर एक उजड़ा हुआ नगर है। यहां अधिकतर माली रहते हैं। यहां मंडू ऋषि का निवास था। १३८१ ई० तक यहां परिहार राजपूतों की राजधानी रही। फिर इस पर राव चोन्दा ने अधिकार कर लिया। १४५९ ई० तक यहां राठोर राजपूतों की राजधानी रही। नागादरी नदी के ऊपर बौद्ध लोगों का बनवाया हुआ छोटा किला है। इसमें एक छोटी अंधेरी गुफा है। यहां अन्तिम परिहार राजा नाहरराव की मूर्ति बनी है। चोटी पर गुप्त कालीन लिपि में दो तीन नाम लिखे हैं। बाहर की ओर दसवीं शताब्दी का शिला लेख है। यहां कई प्राचीन मन्दिरों के भग्नावशेष बिखरे हुये हैं। दक्षिण पूर्व की ओर एक तोरण के दो स्तम्भ हैं। ऊंचे पठार पर दुर्ग के पास पांच कुंड हैं। यहीं मारवाड़ की रानियों की छतरी बनी हैं। महाराजा अजीतसिंह की समाधि बहुत बड़ी बनी है। यहीं तेंतीस करोड़ देवताओं का स्थान है।

एक थम्भा महल एक स्तम्भ या खम्भे के समान दिखाई देता है। आधमील उत्तर-पूर्व की ओर रावण की चावरी है जहाँ लंका के रावण मन्दोर के राजा की बेटी मन्दोदरी से व्याह हुआ था।

मल्लानी जोधपुर राज्य का सब से बड़ा जिला है। इसका क्षेत्रफल ५७५० वर्ग मील और जनसंख्या लगभग २ लाख है। इस जिले में रेतीले टीले बहुत हैं। कोई कोई टीले चार पांच सौ फुट ऊंचे हैं। इस जिले के उत्तरी पश्चिमी भाग का मरुस्थल सिन्ध और जैसलमेर के मरुस्थल से मिल गया है। यहां पानी प्रायः खारा मिलता है। कहीं-कहीं पानी विषैला

है। इसके पीने से मनुष्य और पशु मर जाते हैं। कुओं और तालाबों का पानी वर्षा होने पर ही पीने योग्य होता है। मार्च तक फिर बिगड़ जाता है। ग्रीष्म ऋतु में पानी की बड़ी कमी हो जाती है। मीठे पानी के लिये दाम देना पड़ता है। बलुई भूमि में ऊंट भेड़ बकरी के चरने के लिए घास हो जाती है। बलोचियों के समान घुमक्कड़ लोग इन्हें पालते हैं। यहां की एक मात्र नदी लूनी है जो बड़ी टेढ़ी चाल से यहां बहती है।

बारमेर, तख्ताबाद और सेतराव के पास चालीस ताल हैं। ऋतु अनुकूल होने पर इन तालों की तली में यहां गेहूँ उगाया जाता है। इन सूखे तालों में ८ फुट से लेकर २४ फुट की गहराई तक कुओं में पानी निकल आता है। यहां मुल्तानी और खारी मिट्टी बहुत मिलती है। यहां ऊनी कम्बल, ऊंट के बालों की कालीनें और ऊनी और सूती मिले हुए कपड़े बहुत बनते हैं। इस जिले के घोड़े भी प्रसिद्ध हैं।

गांवों में सर्वोत्तम घोड़े पाले जाते हैं। इस जिले में थाल या रेतीली, नयर या कड़ी चिकनी मिट्टी पर या चूने की पहाड़ियों की तलहटी में अच्छी मिट्टी पाई जाती है। कड़ी चिकनी मिट्टी में वर्षा होने पर केवल घास उगती है। वैसे यह बड़ी नमकीन और खारी होती है। पर मिट्टी अधिक उपजाऊ होती है। इसमें पानी भी निकट मिल जाता है अतः यहां वर्ष में एक दो फसलें हो जाती हैं। ऐसी भूमि जिले में बहुत कम है। जौ, चना और तुम्बी यहां की प्रधान फसलें हैं। बाजरा मूंग,

मोठ तिल और कपास की खेती होती है। गेहूँ केवल लूनी नदी के किनारों पर होता है। ऐतिहासिक दृष्टि से यह जिला बहुत पुराना है। यहीं लूनी नदी के किनारे पर राठोर राज्य का आरम्भ हुआ था। एक गांव को छोड़कर समस्त जिला जागीरों में बटा हुआ है। इनमें बारमेर प्रधान जागीर है। तिलवारा में मार्च मास में मेला लगता है। बारमेर इस जिले की राजधानी है। यहीं जागीर के ठाकुर भी रहते हैं। कहते हैं तेरहवीं शताब्दी में राजा बाहद ने इसे बसाया था। इसी से इसका नाम बाहदमेर (बाहद का किला) या बारमेर पड़ गया। एक पहाड़ी पर पुराने किले के भग्नावशेष हैं। यहां डाकघर, अस्पताल, मिडिल स्कूल और मारवाड़ी पोशाल है। यह बीकानेर जोधपुर रेलवे का एक स्टेशन है। यहां बाल ऋषि का एक प्राचीन मन्दिर है। यहां चक्कियां और ऊँट की झालर बनाने का काम होता है। ४ मील उत्तर पश्चिम की ओर जूना बारमेर या पुराना नगर है।

जासोल जागीर में ७२ गांव हैं। प्रधान नगर जासोल है। यह लूनी नदी के बायें किनारे पर बालोतरा स्टेशन से २ मील दूर है। यह पहाड़ी के ढाल पर बसा है। यहां डाकघर, स्कूल और अस्पताल है।

मारोत हुकूमत—यह जिला राज्य के उत्तरी-पूर्वी कोने पर स्थित है। इसका क्षेत्रफल ४९८ वर्ग मील और जनसंख्या ६०,००० है। इस जिले में कुएं बहुत हैं। इसलिये रबी और खरीफ दोनों फसलें होती हैं। मारोत प्रधान नगर है जो कुचावन रोड स्टेशन से ८ मील उत्तर-पूर्व की ओर है। यहां डाकघर और स्कूल है।

मेड़ता हुकूमत—यह जिला राज्य के उत्तरी पूर्वी भाग में स्थित है। इसका क्षेत्रफल १६१८ वर्ग मील है। इसमें एक चौथाई खालसा है। इसकी जनसंख्या डेढ़ लाख है। इसमें एक (मेड़ता) नगर और ३७० गांव हैं। जिले के आधे भाग में मीठे पानी के कुएं बहुत हैं। अधिकतर भूमि बालू और चिकनी मिट्टी का मिश्रण है और प्रायः उपजाऊ है। बाजरा, ज्वार, तिलहन, गेहूँ, जौ, चना प्रधान फसलें हैं। कुछ भाग में गन्ना, कपास, मक्का और तम्बाकू भी होती है। लूनी नदी इस जिले के दक्षिणी-पूर्वी कोने पर कुछ मील तक बहती है। इस जिले में सूती कपड़े ऊनी कम्बल और चटाइयां बुनने का काम होता है। यहां मिट्टी के बर्तन और खिलौने भी बनाये जाते हैं। इस जिले में अलनियावास और रियन दो बड़ी जागीरें हैं।

जिले का प्रधान नगर मेड़ता है। यह रेल द्वारा जोधपुर से ७३ मील उत्तर-पूर्व की ओर है। मेड़तारोड स्टेशन से एक शाखा लाइन मेड़ता तक आती है। इस नगर को जोधा के चौथे बेटे दूदा ने १४९८ में बसाया था। मालदेव ने यहां कुआं और किला बनवाया और इसका नाम माल कोट रक्खा। १५६२ ई० में भीषण संग्राम के पश्चात सम्राट अकबर ने इसे जीत लिया। पर बीस वर्ष के पश्चात उसने इसे जोधपुर के राजा उदयसिंह को लौटा दिया। मेड़ता पहले एक बड़ा व्यापार केन्द्र था। यहां खसखस के पंखे, परदे, हाथी दांत का सामान, ऊनी चोगे चटाइयां, साबुन और खिलौने बनते हैं। यहां एंग्लो वर्नाक्यूलर स्कूल, डाकघर और अस्पताल हैं। कहते हैं यहां की बड़ी मस्जिद

को अकबर ने बनवाया था। यहां एक बड़ी बावली और कई मन्दिर हैं। उत्तर पूर्व में फलौदी गांव में एक विशाल जैन मन्दिर है। यहां प्रति वर्ष एक मेला लगता है। मेड़ता रोड के पास रूई के गट्ठे बनाने की मिल है। मेड़ता के पड़ोस में कई बार भीषण संग्राम हुआ।

रियन नगर इसी नाम की जागीर का केन्द्र स्थान है। यह लूनी नदी के दाहिने किनारे पर स्थित है। यह मेड़ता स्टेशन से १६ मील दक्षिण-पूर्व को ओर है। यह नगर चारदीवारी से घिरा है। मैदान के ऊपर २०० फुट ऊँची हुई पहाड़ी पर किला बना है। यहां कई कुएं और ४० फुट गहरी बावली है। इसके ऊपर बड़े पेड़ों की छाया रहती है। यहां डाकघर और स्कूल है। इसकी जन संख्या ५००० है।

नागौर हुकूमत—यह जिला राज्य के उत्तरी-पूर्वी भाग में स्थित है। इसका क्षेत्रफल २६०८ वर्ग मील है। ¼ भाग खालसा है। इस जिले की जन संख्या १७०,००० है। इस में ४२० गांव और ४ नगर हैं। लाडनू नगर और कुछ गावों को मिलाकर डीडवाना जिला बना दिया गया है। इस जिले की भूमि बलुई है। यहां कुएं कम हैं। जो कुएं यहां हैं उनमें पानी बहुत गहराई पर मिलता है। उनका पानी प्रायः खारा होता है। इसलिये यहां अधिक अच्छी फसलें नहीं होती हैं। खेती के योग्य प्रायः आधे भाग में बाजरा होता है। शेष भाग में ज्वार, उर्द, और तिल होते हैं। पर चरने योग्य घास अधिक होती है। यहां की भैंस और गाय प्रसिद्ध हैं। जिप्सम या खाड़ी जिलेभर में पाया

जाता है। खातू और अन्य स्थानों में पीला पत्थर निकाला जाता है। खिन्वसर जिले की प्रधान जागीर है।

नागौर नगर इस जिले की राजधानी है। यह जोधपुर बीकानेर रेलवे पर जोधपुर शहर से प्रायः १०० मील उत्तर-पूर्व की ओर है। यह नगर चारदीवारी से घिरा है। यह चार मील से अधिक लम्बी और ढाई फुट से ५ फुट तक मोटी है। इसकी उंचाई १७ फुट है। इसमें छः दरवाजे हैं। ३ दरवाजे दक्षिण की ओर हैं। एक एक दरवाजा पूर्व उत्तर और पश्चिम की ओर है। जो भाग युद्ध में टूट गये उनकी मरम्मत के लिये महाराजा बख्तसिंह ने मस्जिदों के पत्थर लगवा दिये। इससे इन भागों में अरबी और फारसी के लेख मिलते हैं। यहां डाकघर, स्कूल, अस्पताल और डाक बंगला है। यहां पीतल और लोहे के बर्तन अच्छे बनते हैं। ताले, सितार, हाथी दांत के खिलौने, ऊंट की कांठी, जीन, लकड़ी का रंगीन सामान और रंगा हुआ कपड़ा बनता है। नगर में कई प्राचीन मन्दिर हैं। बीच में किला है। इस की दुहरी चारदीवारी लगभग एक मील लम्बी है। बाहरी दीवार २५ फुट और भीतरी दीवार ५० फुट ऊंची है। इसकी मुटाई १२ फुट से ३० फुट तक है। यहां महल, फव्वारा शाहजहां की बनवाई हुई मस्जिद और गुफा है। नागौर को नागराजपूतों ने बसाया था। इसका पुराना नाम नागपुर था। पहले यहां पृथ्वीराज चौहान का अधिकार था। फिर यह दिल्ली के मुसलमान राजाओं के अधिकार में रहा। चौदहवीं शताब्दी के अन्त में रावचोन्दा ने इसे छीन लिया। पर उसके बेटे के हाथ से यह फिर निकल गया। राव मालदेव

ने इस पर अधिकार कर लिया। पर अकबर ने इसे फिर ले लिया। कुछ समय तक यह बीकानेर के राजा को मिल गया। अन्त में यह राजा उदयसिंह के हाथ में आ गया। कुछ समय तक यह शाहजहां और औरंगजेब के हाथ में रहा। अठारहीं शताब्दी के आरम्भ में यह जोधपुर राजवंश के अधिकार में स्थायी रूप से आगया। नागौर की जनसंख्या १५००० है।

मुंडवा नगर (६०००) नागौर जिले में जोधपुर शहर से ८९ मील उत्तर पूर्व की ओर स्थित है। वहां लकड़ी के खिलौने अच्छे बनते हैं। यह एक व्यापारिक स्थान है। यहां धनी मारवाड़ी रहते हैं। यहां डाकघर स्कूल और पोशाल है। यहां एक बगीचा भी है जो ताल से सींचा जाता है। दिसम्बर और जनवरी के महीने में गिरधारी जी का मेला लगता है। यहां मारवाड़ और मियानी, (हिसार) लोग अधिक आते हैं। यहां बैल बहुत बिकते हैं।

पचभद्र हुकूमत—यह जिला जोधपुर राज्य के प्रायः मध्य में स्थित है। इसका क्षेत्रफल ८५४ वर्ग मील है। इसकी जन संख्या ३०,००० है। यहां की भूमि बलुई और पानी खारा है। जिले के दक्षिणी भाग में लूनी नदी बहती है। इसी भाग को बीकानेर जोधपुर रेलवे पार करती है।

बालोतरा लूनी नदी के दाहिने किनारे पर जोधपुर शहर से ७० मील दूर है। यह जोधपुर बीकानेर रेलवे का एक स्टेशन है। यह एक बलुई पहाड़ी पर बसा है। डाक-तारघर स्कूल मारवाड़ी पोशाल और डाक बंगला है। यहां कपड़ा रंगने और छापने का काम होता है। नदी के (लेकिन दूसरे जिले में)

जासोल में अस्पताल है। यहां से १० मील पश्चिम की ओर तिलवारा में मार्च मास में घोड़ों और गाय बैल की बिक्री के लिए मेला लगता है।

पचभद्रा नगर इस जिले का केन्द्र स्थान है। यह पचभद्रा स्टेशन से ५ मील पूर्व की ओर जोधपुर शहर से ८० मील दूर है। यहां डाकघर और स्कूल है। ग्रीष्म ऋतु में जब पानी की कमी पड़ जाती है तब पानी रेल द्वारा बाहर से मंगाया जाता है। यह भारतवर्ष का एक सब से अधिक गरम स्थान है। यहां छाया में कभी कभी १२२ अंश फारेन हाइट तापक्रम हो जाता है। यहां से पांच मील पश्चिम की ओर नमकीन झील है। इससे नमक निकाला जाता है।

पाली हुकूमत—राज्य के दक्षिण-पूर्व में स्थित है। इसका क्षेत्रफल १०२४ वर्ग मील है। इस में एक चौथाई से अधिक भूमि खालसा है। इसकी जनसंख्या लगभग ५०,००० है। इसमें एक पाली नगर और ८० गांव हैं। यहां की भूमि मटियार है। कुओं की अधिकता है। रबी और खरीफ दोनों फसलें होती हैं। पर अधिकतर भूमि में ज्वार और बाजरा उगाया जाता है। जोधपुर बीकानेर रेलवे जिले के पूर्वी भाग में प्रवेश करती है और आगरा से अहमदाबाद को जाने वाली रेलवे जिले के दक्षिणी-पूर्वी कोने को पार करती है।

खरवा इस जिले की प्रधान जागीर है। इसमें ११ गांव हैं। खरवा गांव अवा स्टेशन से ६ मील और जोधपुर शहर से ५६ मील दूर है।

पीली नगर या मारवाड़—पाली नगर जनसंख्या १३०००

बांदी नदी के दाहिने किनारे पर जोधपुर शहर से ५० मील दक्षिण पूर्व की ओर है। यह जोधपुर बीकानेर रेलवे का एक स्टेशन है। यहां डाकघर, एक दरबार स्कूल ६ प्राइवेट स्कूल अस्पताल और डाक बंगला है। यहां रुई ओटने, सूती ऊनी और रेशमी कपड़ा रंगने छापने का काम होता है। बांदी नदी के पानी में विशेषता यह है कि इसके पानी में रंग डाल कर रंगने से कपड़े का रंग पक्का हो जाता है। पाली नगर पर राठौर राजपूतों के कन्नौज से आने के पूर्व १२१२ ई० तक ब्राह्मणों का अधिकार था। यह उन्हें परमार और परिहार राजपूतों ने दिया था। फिर यहां जोधपुर राज्य के संस्थापक सियाह जी ने अपना अधिकार कर लिया। रेलवे के खुलने के पहिले पाली एक बड़ा व्यापार केन्द्र था। १८३८ ई० में यहां ताऊन (प्लेग) फैली। कहते हैं इसके कीड़े चीन से आने वाले रेशम के साथ बाहर से आ गये थे। इस समय पाली नाम के दो भाग हैं। एक भाग पुराना है। दूसरा भाग नया है। दोनों में कई मन्दिर हैं। सोमनाथ का मन्दिर बहुत पुराना है। एक स्थान पर गुजरात के कुमार पाल का नाम और सम्वत १४४३ ई० खुदा है। यहीं विशाल नौलाख जैन मन्दिर हैं। मुसलमानों के प्रहार से बचाने के लिये मन्दिर के आंगन में एक छोटी मस्जिद बना दी गई थी। भीतर प्रवेश करने के लिये एक छोटा द्वार है।

पर्वतसर हुकूमत—यह जिला राज्य के उत्तरी-पूर्वी भाग में स्थित है। इसका क्षेत्रफल ८४० वर्गमील है। इसकी जनसंख्या ९०,००० है। इसमें १६५ गांव हैं। पहाड़ी टीलों और छोटी

छोटी पहाड़ियों ने इस जिले को बहुत विषम बना दिया है। कोई कोई पहाड़ी समुद्र-तल से २००० फुट ऊँची है। कुछ पहाड़ियां जंगलों से ढकी हैं। यहां की मिट्टी कुछ बलुई होने के पर भी उपजाऊ है। बाजरा, उर्द, मूँग, ज्वार यहां की बड़ी फसलें हैं। कुछ गेहूँ, तिलहन और कपास भी होती है। जोधपुर बीकानेर रेलवे इस जिले के बीच में होकर जाती है। यह लाइन मकराना गांव में होकर जाती है जहां संगमरमर पत्थर बहुत निकाला जाता है। कुछ स्थानों में लहरिया और दूसरा पत्थर निकाला जाता है।

पर्वतसर गांव इस जिले की राजधानी है। यह मकराना रेलवे स्टेशन से १२ मील दक्षिण की ओर किशनगढ़ राज्य की सीमा के पास स्थित है। इसकी जनसंख्या ३१०० है। यहां डाकघर और स्कूल है। भादों के महीने में यहां तेजा जी का मेला लगता है। इसमें गधे और बैल बहुत बिकते हैं। व्यापारी पंजाब, संयुक्तप्रान्त और समीप के राज्यों से आया करते हैं। जाट लोग तेजा जी को बहुत मानते हैं। पर्वतसर से ६ मील पश्चिम की ओर कैवास माता का मन्दिर किन्सरिया गांव के पास एक सपाट पहाड़ी की चोटी पर बना है। मन्दिर के सामने वाली दीवार पर संस्कृत में १००० ई० का लेख खुदा है। पूर्व की ओर खिजारपुर गांव के बाहर १२०० वर्ष के पुराने एक वैष्णव मन्दिर के भग्नावशेष हैं।

फलौदी हुकूमत—यह जिला राज्य के उत्तर में स्थित है। इसका क्षेत्रफल २६२४ वर्ग मील है। इसमें ⅝ भूमि खालसा है।

इस जिले की जनसंख्या ६०,००० है। इसमें दो (लोहावत और फलौदी) नगर और ७१ गांव हैं। यह जिला एक रेतीला मरुस्थल है। इसमें पानी की कमी है। खेती के योग्य ८० प्रतिशत भूमि में बाजरा होता है। शेष में तिल ज्वार और कपास होती है। लोहावत नगर जोधपुर शहर से ५५ मील उत्तर पश्चिम की ओर है। यह एक व्यापारिक मंडी है। यहां सोने के आभूषण अच्छे बनते हैं। यहां डाकघर और स्कूल है। फलौदी नगर इस जिले का केन्द्र स्थान है। यह जोधपुर शहर से ७० मील उत्तर पश्चिम की ओर है। इसकी जनसंख्या १४००० है। यह पाली के प्राचीन नगर की अपेक्षा अधिक उन्नत पर हो गया। फलौदी साहसी मारवाड़ी व्यापारियों का नगर है जो भारतवर्ष के बाहर भी व्यापार करते हैं और यहां बहुत सा धन लाते हैं। इनके यहां सुन्दर भवन बने हैं। यहां डाकघर, स्कूल, अस्पताल और मारवाड़ी पोशाल है। यहां धातु के बर्तन और ऊँट के बालों के बिछौने बनते हैं। यह नगर पन्द्रहवीं शताब्दी के मध्य में बसाया गया। १०० वर्ष बाद मालदेव ने इस पर अपना अधिकार कर लिया। अकबर ने इसे रावल भीम को सौंप दिया। कुछ समय तक यहां बीकानेर राज्य का अधिकार रहा। अन्त में महाराजा अजीतसिंह ने इसे जीत लिया। यहां का किला अच्छा बना है। इसकी दीवारें ४० फुट ऊँची हैं। यहां एक बड़ा ताल और कुछ महल बने हैं। यहां से १० मील उत्तर की ओर फलौदी झील से नमक निकाला जाता है।

सांभर हुकूमत—यह जिला राज्य के उत्तरी-पूर्वी भाग में है। इसका क्षेत्रफल ४६२ वर्ग मील है। इसके एक तिहाई भाग

पर जैपुर और जोधपुर दरबारों का सम्मिलित अधिकार है। इसमें सांभर नगर और १२ गांव शामिल हैं। इसकी जनसंख्या १४८७७ है। इसमें ७४३८ मनुष्य जोधपुर राज्य में रहते हैं। १९०२ ई० में नाव हुकूमत तोड़ दी गई उसके गांव भी सांभर में शामिल कर दिये गये। इस प्रकार इसकी जनसंख्या ३३००० हो गई। अब से दो सौ वर्ष पहले जैपुर और जोधपुर के राज्यों ने मिलकर सांभर नगर और ६० गांव जीते थे फिर कुछ गांव अपने अपने राज्यों में मिला लिये। अन्त में केवल १२ गांव सम्मिलित रह गये। इस जिले को जोधपुर बीकानेर रेलवे और बाम्बे, बड़ौदा सेन्ट्रल इण्डिया रेलवे पार करती है। कुचावन रोड में दोनों का जंकशन है। बाजरा जौ, कपास, तम्बाकू यहां की उपज है। जिले की एक मात्र जागीर कुचावन है। कुचावन नगर चार दीवारी से घिरा है। यह नारायणपुर स्टेशन से ८ मील उत्तर की ओर है। यहां तलवार. बन्दूक और ताले बनाये जाते हैं। यहां डाकघर, स्कूल और किला है। दक्षिण की ओर दो नमकीन ताल हैं।

न.व नगर सांभर झील के किनारे पर बसा है। यह चार दीवारी से घिरा है। यह कुचावन रोड स्टेशन से १ मील पूर्व की ओर है। यहां नमक और सोजनी (गद्दे) बनाने का काम होता है। यहां स्कूल अस्पताल और पोशाल है।

सांभर नगर जिले की राजधानी है। यहां जैपुर और जोध-पुर दरबारों का सम्मिलित अधिकार है। यह सांभर झील के दक्षिणी पूर्वी किनारे पर स्थित है। यह बाम्बे बड़ौदा सेन्ट्रल

इण्डिया रेलवे का एक स्टेशन है। यहां डाक तारघर, दो अस्पताल और ११ स्कूल हैं। देवदानी ताल और मन्दिर बहुत प्राचीन हैं। सांभर नगर प्राचीन है। यहां चौहान राजपूतों की प्रथम राजधानी बनी। यह लोग गंगा की घाटी से यहां आठवीं शताब्दी के मध्य में आये थे। पृथिवीराज चौहान जो(११९२ई०) में मरा इनका अन्तिम राजा था। कुछ समय तक यहां दिल्ली के बादशाहों का राज्य रहा। पन्द्रहवीं शताब्दी के आरम्भ में मेवाड़ के राना मोकल ने इसे जीत लिया। १५३२ से १५६९ ई० तक यहां राव मालदेव ने राज्य किया। फिर यहां मुगलों का राज्य हो गया। १७०८ ई० में जैपुर और जोधपुर दरबारों ने मिलकर इसे जीत लिया।

सांचोर हुकूमत—यह जिला राज्य के दक्षिण-पश्चिम में है। इसका क्षेत्रफल १७७६ वर्ग मील है। इसमें ९८ वर्ग मील खालसा है। इसकी जन संख्या ७१००० है। इसमें २३१ गांव हैं इस जिले में लूनी सबसे अधिक चौड़ी हो जाती है। कभी कभी इसमें बाढ़ भी आ जाती है। बाढ़ के बाद जो कुछ भी मिट्टी बिछ जाती है उसमें गेहूँ की बढ़िया फसल होती है। दक्षिण की ओर भाटकी के पास चालीस पचास वर्ग मील का ताल या दलदल है वर्षा ऋतु में यह ताल या दलदल बन जाता है। सूख जाने पर इसकी तली में गेहूँ और चना की फसलें होती हैं। सांचोर की गाय बहुत प्रसिद्ध हैं। सांचोर गांव जोधपुर शहर से १३२ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर है। इसकी जन संख्या २१०० है। इसमें डाक घर, स्कूल पोशाल और अस्पताल है। यहां पीतल के बर्तन और ऊनी

बिछौने अच्छे बनते हैं। इसके पड़ोस के खेड़ों में विशाल ईंट और गढ़े हुये पत्थर मिलते हैं।

साकरा हुकूमत—यह जिला उत्तर-पश्चिम की ओर है। इसका क्षेत्रफल १२७९ वर्ग मील है। इसमें एक (पोकरन) नगर और ७१ गांव हैं। इसकी जन संख्या २६००० है। यह समूचा जिला रेतीला और उजाड़ है। यहां केवल बाजरा और मोठ की खेती होती है। पर यहां के ऊँट प्रसिद्ध हैं। सांकरा गांव इस जिले की राजधानी है। यह जैसलमेर की सीमा के पास जोधपुर से १०० मील उत्तर-पश्चिम की ओर है। इस गांव में ८०० मनुष्य रहते हैं। यहां एक डाक घर है।

इस जिले की पोकरन ज़ागीर में १०० गांव हैं। यहां के जागीरदार चम्पावत राठौर हैं। इनकी उत्पत्ति जोधा के भाई चम्पा से हुई। यह प्रधान ठाकुर माने जाते हैं। इन्हें महाराज के पीछे खवास पर बैठने का अधिकार है। इस जागीर में पांच (पोक) नमकीन दलदल (रन) हैं। इसलिये इसका नाम पोकरन पड़ा। पोकरन नगर जोधपुर शहर से ८५ मील उत्तर पश्चिम की ओर और जैसलमेर से ६५ मील पूर्व की ओर स्थित है। यहां डाकघर, स्कूल और अस्पताल है। यहां का छोटा किला मजबूत बना है। यहां से २ मील की दूरी पर सातलमेर के खंडहर हैं। इस गांव को राव जोधा के बड़े बेटे सातल ने बसाया था। यहां पर एक जैन मन्दिर और कुछ समाधियां हैं। पास ही ४ मील लम्बा और २ मील चौड़ा खारा पोकरन (दलदल) ताल है। रेल से दूर होने से इसमें से नमक नहीं

निकाला जाता है। यहां से १० मील उत्तर की ओर रामदेवरा गांव में भादों के महीने में रामदेव का मेला लगता है।

शिव हुकूमत—यह जिला पश्चिम की ओर है। इसका क्षेत्र-फल २००४ वर्ग मील है। इसका $\frac{1}{7}$ भाग खालसा है। इसकी जन संख्या २५००० है। इसमें ६५ गांव है। इस जिले का अधिकतर भाग मरुस्थल है। कुछ भाग में बाजरा की खेती होती है। यहां ऊँट बहुत पाले जाते हैं। शिव गांव इस जिले की राजधानी है। यह जोधपुर शहर से ११५ मील ठीक पश्चिम की ओर जोधपुर बीकानेर रेलवे के बारमेर स्टेशन से ३२ मील उत्तर की ओर है। इस गांव की जन संख्या ६५० है। यहां डाक घर और स्कूल हैं।

शेरगढ़ हुकूमत—यह जिला उत्तरी पश्चिमी भाग में स्थित है। इसका क्षेत्रफल १४५६ वर्ग मील है। इसका $\frac{1}{16}$ भाग खालसा है। इसकी जन संख्या ५७००० है। इसमें ८० गांव हैं। खेती के योग्य भाग में केवल बाजरा होता है। अधिकतर भाग में मरुभूमि है। ऊँट बहुत पाले जाते हैं। शेरगढ़ गांव जिले की राजधानी है। यह रेतीले टीलों से घिरा है। यहां डाक घर और स्कूल है। यह जोधपुर शहर से ४५ मील पश्चिम की ओर है।

सिवान हुकूमत— यह राज्य के दक्षिणी भाग में स्थित है। इसका क्षेत्रफल ७६० वर्ग मील है। इसमें $\frac{1}{10}$ भाग खालसा है। इसकी जन संख्या ५४००० है। इसमें ११२ गांव हैं। लूनी नदी जिले के उत्तरी भाग में होकर बहती है। यहां की भूमि रेतीली

है। दक्षिणी भाग में ऊँची नीची पहाड़ियां जंगलों से घिरी हुई हैं। यहां काले भालू मिलते हैं। खेती के योग्य अधिकतर भाग में बाजरा होता है। कुछ भाग में ज्वार, जौ, कपास और तिल-हन की खेती होती है। सिवान का छोटा नगर जिले की राजधानी है। यह जोधपुर शहर से ६० मील दक्षिण-पश्चिम की ओर है। यह एकदम पहाड़ियों से घिरा है। यह समुद्र-तल से ३१९९ फुट ऊँचा है। इसकी जनसंख्या ३१०० है। यहां डाक घर और स्कूल हैं। पश्चिम की ओर एक पहाड़ी पर किला बना है। इस किले को मुसलमान आक्रमणकारियों ने कई बार घेर लिया था।
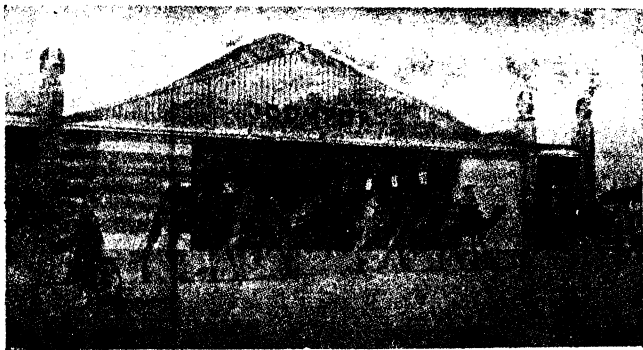
जोधपुर नगर का एरोड्रोम (हवाई स्टेशन) यहां नवीन और प्राचीन जोधपुर का सम्मिश्रण है।

सोजत हुकूमत—यह राज्य के पूर्वी भाग में स्थित है। इस जिले की भूमि उपजाऊ है। मिट्टी प्रायः चिकनी है। कुओं की अधिकता है। इसका क्षेत्रफल ११७२ वर्ग मील है। $\frac{1}{4}$ भाग

खालसा है। जिले की जन संख्या १७०,००० है। इसमें एक (सोजत) नगर और २१२ गांव हैं। बाजरा, ज्वार, तिलहन मक्का, कपास, और चना की खेती होती है। इस जिले में बलुआ पत्थर बहुत है। कुछ भागों में सीसा, जस्ता और तांबा भी है। बाम्बे, बड़ौदा और सेन्ट्रल इण्डिया रेलवे इस जिले के उत्तर-पूर्व से आकर दक्षिण-पश्चिम की ओर निकल जाती है। मारवाड़ जंकशन के पास जोधपुर बीकानेर रेलवे इसमें मिलती है। इस जिले में कई जागीर हैं। कन्तालिक बगरी, अवा अधिक प्रसिद्ध हैं। बगरी में लकड़ी रंगने का काम अच्छा होता है। अवा में महादेव का प्राचीन मन्दिर है। इस पर १०७२ ई० का शिला लेख है। सोजत नगर सोजत जिले की राजधानी है। यह लूनी की सहायक सुकी नदी के बायें किनारे पर स्थित है। बाम्बे, बड़ौदा, सेन्ट्रल इण्डिया रेलवे की सोजत रोड स्टेशन से यह ७ मील उत्तर-पश्चिम की ओर है। यह नगर चार दीवारी से घिरा है। यहां डाक तार घर एक दरबार स्कूल, एक आर्य-समाज का स्कूल पांच और प्राइवेट स्कूल, अस्पताल और डाक बंगला है। यहां जीन लगाम, तलवार, भाले और चाकू बनाने का काम होता है। कपास, ऊन, अनाज और अफीम का व्यापार होता है। यह स्थान प्राचीन है। सेजल माता (देवी) से इसका नाम सोजत पड़ा। १०५४ ई० में यहां राठोर राजपूतों का अधिकार हो गया।

कर्नल हिज़-हाईनेस राज-राजेश्वर महाराजाधिराज सर उमेद-सिंह बहादुर, जी० सी० एस० आई० जी० सी० आई० ई०, के० सी० वी० ओ०, महाराज जोधपुर (मेवाड़)।
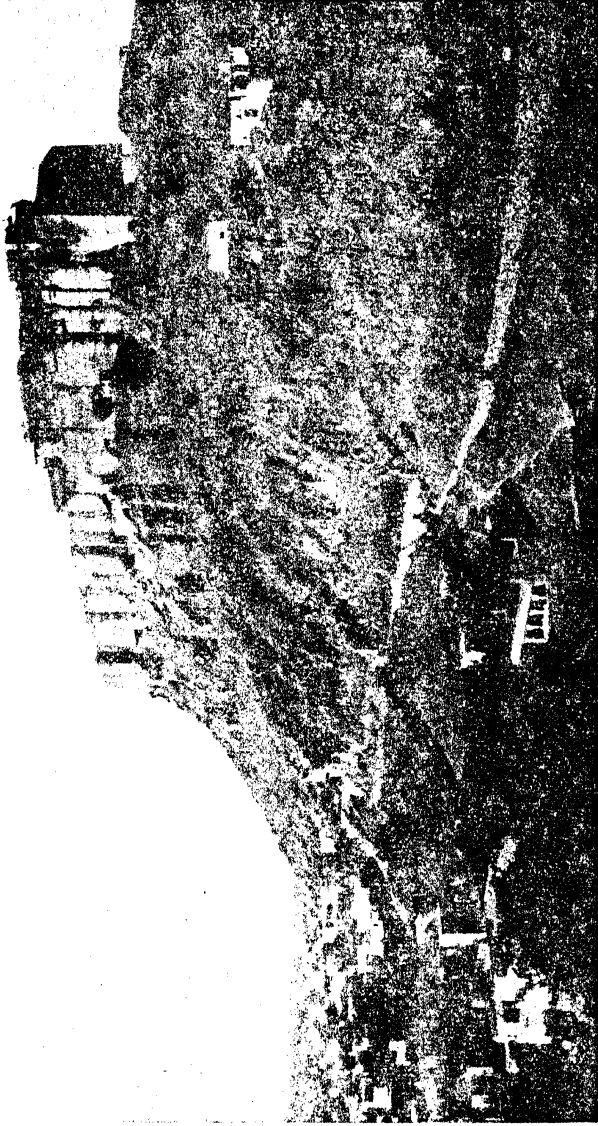
जोधपुर का किला

स्वर्गीय महाराज का स्मारक भवन